भारत का जनजातीय समाज

साहित्य एवं संस्कृति

संपादक
डॉ. आशाराम साहू

भारत का जनजातीय समाज
साहित्य एवं संस्कृति

संपादक

डॉ. आशाराम साहू

संपादक मंडल

1. श्री बी.महोबिया / 2. डॉ. ए.के.धमगाये
3. डॉ. सी.के.साहू / 4. श्री के.आर.ठाकुर
5. सुश्री रेणुका ठाकुर / 6. श्री गणेश नेताम

पंकज बुक्स

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिक तौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश को फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के अपने विचार हैं, जिनसे प्रकाशक का कोई लेना-देना नहीं हैं।

Bharat Ka Janjatiya Samaj : Sahitya Evam Sanskriti
Edt. by
Dr. Asharam Sahu

I.S.B.N.: 978- 81- 8135- 197-5

© डॉ. आशाराम साहू

मूल्य : 495.00 रुपये

प्रथम संस्करण : सन् 2023

प्रकाशक : **पंकज बुक्स**

109-ए, पटपड़गंज गाँव, दिल्ली-110091

दूरभाष : 8800139684, 9312869947

वितरक : भावना प्रकाशन, दिल्ली-91

आवरण : नीरज

शब्द संयोजक : पंकज ग्राफिक्स, दिल्ली-110092

मुद्रक : राधा ऑफसेट, दिलशाद गॉर्डन, दिल्ली।

Published by : Pankaj Books, 109-A , Patparganj Village, Delhi-110091

E-mail : bhavnaprakashan@gmail.com

विषय सूची

लोकसंस्कृति और जनजातीय संस्कृति के विभेदक तत्त्व : 13
-डॉ. विनय कुमार पाठक

हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जीवन : 20
-डॉ. श्याम मोहन पटेल

शिक्षा जीवन का साधन : 27
-डॉ.(श्रीमती) बी.एन. मेश्राम

जनजातीय लोकनृत्य: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में : 29
-अरुण कुमार यदु

हिन्दी के प्रमुख उपन्यासों में जनजातीय चेतना : 35
-डॉ. आशाराम साहू

जनजातीय समाज-एक परिचय : 40
-डॉ.(श्रीमती) अर्चना दीवान

प्रेमचंद की कहानियों में दलित वर्ग की दशा : 43
-प्रेमलता यदु / डॉ. आंचल श्रीवास्तव

त्रिपुरा की लुसाई जनजाति का सांस्कृतिक परिचय : 53
-डॉ. उत्पल बिस्वास

बस्तर के जनजातीय लोक परम्परा में मैत्री संकल्प विधान : 57
-डॉ. मानकचन्द टंडन

जनजातीय समाज एवं संस्कृति : 61
-डॉ. (श्रीमती) कविता ठक्कर

छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति : 64
-डॉ. जयती बिस्वास

जनजातीय समाज और सरकारी नीतियाँ
-प्रो. प्यारेलाल आदिले

पर्यावरण संरक्षण में जनजातीय समाज की भूमिका : 69
-शिवशंकर राजवाड़े

आदिवासी ध्रुव गोंड़ी, धर्म के गोत्र व वंशावली: एक परिचय : 86
-सुश्री रेणुका ठाकुर

प्रकृति पुत्रों की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर : 89
-श्रीमती प्रियांकी गजभिये

आदिवासियों के स्थानीय पौधे : 92
-श्री मन्नूलाल नायक

भारत का जनजातीय समाज: साहित्य और संस्कृति : 96
-डॉ. अशोक आकाश

जनजातीय समाज की लोक प्रकृति में भुंजिया जनजाति के देव-लोक : 100
-सुमन साहू

जनजातीय जीवन-शैली : 106
-रंजना मंडावी

छत्तीसगढ़ की गोंड़ जनजाति: एक परिचय : 110
-नम्रता परिच्छा

छ.ग. में जनजातीय समाज की अवधारणा एवं जनजातीय संस्कृति : 115
-प्रशान्त कुमार बघेल

आदिवासियों में प्रचलित गोदना प्रथा का अध्ययन : 119
-मनीष कुमार कुर्रे

छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति : 123
-कु. कुसुम

जनजातीय समाज और सरकारी नीतियां : 131
-हुतेश्वरी

कोयतुर गोंड़ जनजाति की सामाजिक और सांस्कृतिक लोक
परंपराओं का अध्ययन : 135
-हेमलाल सहारे

छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति : 140
-बिन्दु डनसेना : 144

जनजातीय समाज और प्रकृति
-अनवर खान / डॉ. बी.एन. जागृत : 148

जनजातीय, साहित्य और संस्कृति
-देवेन्द्र कुमार पटेल : 154

आदिवासी लोकगीत करमा एक मनोरंजक अभिव्यक्ति
-सरिता ठाकुर / सुश्री रेणुका ठाकुर : 156

छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति
-श्री के.आर.ठाकुर : 158

Dr.b.r.ambedkar's Vision on Tribal Development and Indian Constitution
-Dr. Mitali Meshram : 162

Tribal Literature and its Development
-Chaitali Meshram Sharma : 168

Tribal Society : Culture and Literature
-Miss. Chanchal Stela Kujur : 172

Tribal Society and their relation with nature in Chhattisgarh
-Anushree Pandey : 176

The role of the Tribal society in protection environment
-Dr. manorama Pandey : 179

Tribes of india : Pride of the Country
-Dhanesh ram sinha : 183

TheBravest Muria : Chendru Mandavi
-Bhavna Netam : 189

The Great life of Martya : Shree Ramdhin Gond
-Dhriti Netam : 191

जंगल से कटते, बाजार से लड़ते : आदिवासी
-भावना उपाध्याय : 193

21वीं सदी में निजता की तलाश : आदिवासी
-अनीता कुमारी ठाकुर : 197

हिंदी आदिवासी कविता में व्यक्त जीवन संघर्ष
-डॉ. पायल लिल्हारे : 202

शिक्षा जीवन का साधन

-डॉ. (श्रीमती) बी.एन. मेश्राम

मनुष्य और समाज के लिये शिक्षा अति आवश्यक है। शिक्षा जीवन का लक्ष्य नहीं बल्कि एक साधन है। एक सीमा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद हम अपने जीवन की नई चुनौतियों का सामना करने लगते हैं। वैसे तो शिक्षा की कोई सीमा नहीं होती लेकिन हम सुविधा के लिये शिक्षा की परिधियाँ बनाते हैं। कोई भी स्नातक, ज्ञान और शिक्षा का प्रतीक माना जाता है। जन्म से ही कोई बुद्धिमान नहीं होता, इसके लिए जीवन के संघर्षों से गुजरना पड़ता है। अपने आपको समाज के उपयुक्त बनाने के लिए तपस्या करनी पड़ती हैं। इसी के द्वारा व्यक्तित्व का विकास होता है। जिसके पास व्यक्तित्व है, सेवा करने की क्षमता है, कर्त्तव्यनिष्ठा है, वही समाज को कुछ दे सकता है। बुद्धि, पराक्रम, कार्यक्षमता, लगन और धैर्य मनुष्य अपने प्रयास से अर्जित करता है। ये ही जीवन की सम्पत्ति है, जिसके सहारे जीवन क्रम चलता है।

आज एक तरफ विश्वविद्यालयों से शिक्षा लेकर हजारों की संख्या में नवयुवक बाहर जाते हैं, दूसरी तरफ देश में अधिक मात्रा में निरक्षर जनता है। इन दोनों के बीच में जो अन्तर है उसको कम करने के लिये हम लोगों को प्रयास करना चाहिये। एक सुशिक्षित व्यक्ति से समाज को कुछ अपेक्षायें होती हैं, लेकिन यह भी स्वाभाविक है कि शिक्षा पाने के बाद युवक अपने और अपने परिवार के जीवन यापन के संबंध में सोचने के लिये विवश है। वह अवसर की तलाश में रहता है। यदि उसे समुचित अवसर नहीं मिलता है तो उसके मन में समाज और सरकार के प्रति रोष पैदा होता है। लेकिन इससे समस्या का समाधान नहीं होता है। सुशिक्षित युवकों को समस्या के मूल में जाना होगा और उसका समाधान ढूँढना होगा।

राजनीतिक लोकतन्त्र व्यस्क मतदान पर आधारित है। 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले युवाओं को मतदान करने व प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। लेकिन इतना पर्याप्त नहीं है, इमें आर्थिक लोकतंत्र और सामाजिक समानता के

लिये कदम बढ़ाना होगा यदि ऐसा नहीं किया तो समाज में तनाव व संघर्ष उत्पन्न हो जायेगा।

आर्थिक लोकतन्त्र तभी सम्भव है जब उत्पादन वृद्धि पर बल दिया जाये साथ ही श्रमिक को उसके श्रम का उचित फल मिले। यह दृष्टिकोण सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में अपनाना होगा।

इसी तरह सामाजिक क्षेत्र में लोकतांत्रिक मूल्यों को लाने के लिये सामाजिक समानता की आवश्यकता होती है। हर व्यक्ति समाज में समान है किन्तु धार्मिक साम्प्रदायिक और जातिगत भावनायें इस समानता की कल्पना को निर्मूल करने का प्रयास करती है। समाज में हर सुशिक्षित वर्ग को अपने धर्म का पालन करना चाहिये। धर्म वही है, जो प्राणी मात्र के कल्याण की प्रेरणा दे, धर्म वही है जो मानव मात्र में सद्भावना जगाये। मनुष्य को हमेशा सत्य बोलना चाहिये। आर्थिक कठिनाइयाँ हम सबको अस्त-व्यस्त करने की सीमा तक पहुँच गई है। विषमता, शोषण, भूख, पीड़ा और बेकारी तथा भ्रष्टाचार हमारे लिये एक चुनौती है। धार्मिक कट्टरता, सामाजिक कुरीतियाँ, रूढ़िवादिता हमारे लिये अभिशाप बन गई है। इन सबको दूर कैसे किया जायेगा? कौन आगे बढ़कर इस बुराइयों को दूर करेगा? कौन इसके निराकरण का मार्ग निकालेगा? जन समाज आशा की दृष्टि से आपकी ओर देख रहा है। शिक्षित युवा वर्ग को हर चुनौतियों का सामना करने के लिये अपने आपको सक्षम बनाना होगा, आत्मविश्वास रखना होगा। एक अच्छे भारत का निर्माण करने के लिये भारत के किसी कोने में छायी हुई बेबसी, बेकारी और अज्ञानता को दूर करना होगा। शिक्षित वर्ग ही समाज में समानता का सन्देश देगा, समाज के सामने आई चुनौतियों को दूर करेगा।

अतः शिक्षा अच्छा जीवन जीने के लिये, व समाज को नई दिशा देने के लिये आवश्यक है।

संदर्भ :

1. भारतीय शासन एवं राजनीति जैन एवं फड़िया
2. अन्य लेख
3. पत्रिका, समाचार पत्र

प्राचार्य- शास. डॉ. बा. सा. भीमराव अम्बेडकर
स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोंगरगाँव

हिन्दी के प्रमुख उपन्यासों में जनजातीय चेतना

-डॉ. आशाराम साहू

भारत जनजातीय बहुल देश है और यहाँ कुल जनसंख्या की 19 प्रतिशत जनजातीय के रूप में निवासरत है जो 500 अलग-अलग समुदायों में विभाजित है। जिनकी अपनी एक अलग भाषा, सभ्यता, संस्कृति एवं रीति-रिवाज है। वितरण की दृष्टि से देखें तो विश्व में आफ्रीका में सर्वाधिक जनजातीय निवास करते हैं इसके पश्चात दूसरे स्थान में भारत का स्थान आता है। ये वो जनजातीय है जो वर्तमान आधुनिक दुनिया की चकाचौंध से कोसों दूर जंगलों में निवास करते हैं। जिनकी भाषा, रूप एवं संस्कृति में आदिम गंध आज भी महसूस की जा सकती है। इनका जीवन बनावटी दुनिया में दूर जंगलों में पनपती है, संघर्ष एवं अभावों के बीच जिनकी सृजन होती है। वर्तमान में इनकी पहचान भारतीय लोकतंत्र में एक मतदाता से ज्यादा बढ़कर नहीं है। जनजातीय समाज का इतिहास शोषण एवं संघर्ष की गाथाओं से भरा पड़ा है। अगर हम जनजातियों की जीवन संघर्ष की बात करें तो विश्व में फैली सभी जनजाति दिखाई दे जाती है जो आज भी अपनी अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्षशील है। उचित साधन एवं अशिक्षा के कारण यह समाज लगातार पिछड़ता ही रहा है और आये दिन किसी-न-किसी नये मुसीबतों से इनका सामना होता रहता है। जल, जमीन और जंगल को लेकर इनका संघर्ष आज भी कायम है। विकास की बड़ी-बड़ी घोषणाएँ एवं योजनाएँ इनकी समस्याओं के निदान के लिए की तो जाती है किन्तु इन तक पहुँच नहीं पाती, क्योंकि कुछ अंचल आज भी ऐसे हैं जहाँ न बिजली पहुँच पायी है और ना ही सड़कें। हम जानते हैं कि आज साहित्य के माध्यम से इनकी संघर्षों एवं समस्याओं को साहित्यकारों ने अपनी कविताओं, कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से उभारने का प्रयास किया है। इन्हीं प्रयासों में कुछ प्रमुख उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में जनजातीय विमर्श को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिनमें देवेन्द्र सत्यार्थी (रथ के पहिये), फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आंचल), रांगेय

राघव (कब तक पुकारूँ), रणेन्द्र (ग्लोबल गाँव का देवता), संजीव बख्शी (भूलनकांदा) आदि का नाम लिया जा सकता है। वैसे तो जनजातीय विमर्श पर बहुत सारे उपन्यास लिखे गए किन्तु इन सभी उपन्यसों के संबंध में चर्चा करना सम्भव नहीं है, इसलिए कुछ प्रमुख उपन्यासों पर मैं अपनी बात रखूँगा। जहाँ तक जनजातीय विमर्श की बात है, तो सर्वप्रथम देवेन्द्र सत्यार्थी द्वारा लिखित उपन्यास 'रथ के पहिये' का नाम हम ले सकते हैं जिसमें प्रथम बार जनजातीय जीवन एवं संघर्ष का मार्मिक चित्रण मिलता है। यह उपन्यास सन 1952 ई. में प्रकाशित हुई थी जिसमें छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली गोंड़ जनजातियों एवं उनके लोक जीवन से जुड़े मार्मिक पहलुओं का रेखांकन हुआ है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र आनंद, गोंड़ जनजाति के अस्तित्व को लेकर काफी चिंतित दिखाई देते हैं, उनके पिताजी कभी पुरातत्वविद् थे जिन्होंने मोहनजोदड़ो की सभ्यता के संबंध में काफी छानबीन की थी और यही अपेक्षा वे अपने पुत्र आनंद से भी करते हैं कि वह भी मोहनजोदड़ो सभ्यता के जांच-पड़ताल में दिलचस्पी ले। किन्तु वह अपने पिताजी को यह कहकर मना कर देता है कि मोहनजोदड़ो की सभ्यता तो मृतप्राय हो चुकी है उसमें अनुसंधान करने का क्या तुक? इससे बेहतर यह होगा कि जो जीवित सभ्यता है उसे मृतप्राय होने से बचाया जाये यही सोचकर वह छत्तीसगढ़ की गोंड़ जनजाति की सभ्यता एवं उनकी संस्कृति की संरक्षण की ओर उन्मुख होते हैं और कहते हैं कि "मैं सोचता हूँ कि यही समय है कि गोंड़ों की जीवित संस्कृति का अध्ययन किया जाये और हो सके तो उसे आधुनिक सभ्यता के हाथों मिटने से बचाया जा सके। जंगल में रहने वाले आदिवासियों के साथ हमारी प्रगति जुड़ी हुई है।"[1] आनंद का ये विचार हमें एक नई दृष्टिकोण प्रदान करता है कि आदिम सभ्यता आधुनिक सभ्यता के विकास में बाधक नहीं है बल्कि प्रगति का सूचक है। आदिवासी समूह हमेशा से ही विकास के नाम पर ठगे जाते रहे हैं, इस ओर भी उपन्यासकार ने हमारा ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है और यह बताने का भी उद्योग किया है कि भारत के किसी भी कोने में जो आदिवासी विद्रोह हुए हैं उनके पीछे अपने अस्तित्व की सुरक्षा मूल मुद्दा रहा है। आसाम के आदिवासी विद्रोह का उदाहरण देते हुए उपन्यासकार लिखते हैं कि-"आसाम के आदिवासियों में कई बार विद्रोह हुआ और उनके हर विद्रोह को सरकार ने दबा दिया। हर बार विद्रोह का एक ही कारण था कि कबीले के लोग अपने उन्नत पड़ोसियों के हाथों अपना शोषण नहीं चाहते थे।"[2] उपन्यासकार देवेन्द्र सत्यार्थी इस विद्रोह के माध्यम से यह बताने का प्रयास करते हैं कि भारत में जितने भी आदिवासी विद्रोह हुए हैं और भारत के बाहर भी, वह

साम्राज्य विस्तार की दृष्टि से नहीं बल्कि अपनी संस्कृति एवं परंपराओं के संरक्षण की दृष्टि से, जो तीन उद्देश्यों पर आधारित था, जन, जंगल और जमीन और किसी भी सूरत में वे इन्हें बचाना चाहते थे। इस तरह 'रथ के पहिये' उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने गोंड़ आदिवासियों की संस्कृति एवं उनके रीति-रिवाजों को दिखाकर इनकी सुरक्षा के प्रति हमें चिंतन करने का एक महत्वपूर्ण अवसर दिया है जिसे हमें भलीभांति निभाना होगा।

भारत में विकास करने वाली प्रमुख जनजातियों में नटों या करनटों का महत्वपूर्ण स्थान है। हालांकि नट एवं करनटों के जीवन शैली में थोड़ा-बहुत अंतर देखने को मिलती है लेकिन दोनों ही जनजातियों का संबंध नाचने-गाने से है। नट-करनटों से जीवन स्तर में थोड़े ऊँचे जरूर हैं। करनट जयराम पेशा कहे जाते हैं। इनमें नैतिकता का अभाव होता है। यह जनजाति अछूतों की श्रेणी में गिनी जाती है जो समाज की मुख्य धारा से आज भी कटी हुई है।

नट उत्तर भारत में निवास करने वाली एक जाति है, जो हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। इस जाति के प्रमुख प्राय: कलाबाजी या बाजीगरी के साथ गाने-बजाने का कार्य करते हैं जबकि स्त्रियाँ नाचने व गाने का कार्य करती हैं। 'नट' शब्द का अर्थ 'नृत्य' या 'नाटक' करने से है। संभवत: इस जाति के लोगों की इसी विशेषता के कारण समाज में इन्हें 'नट' संज्ञा प्रदान की गई। शरीर के अंग-प्रत्यंग को लचीला बनाकर विभिन्न मुद्राओं में पेश करते हुए लोगों का मनोरंजन करना ही इनका मुख्य पेशा है। इनकी स्त्रियाँ खूबसूरत होने के साथ-साथ हावभाव प्रदर्शन करके नृत्य व गायन में काफी प्रवीण होती हैं। नटों में मुख्य रूप से दो उपजातियाँ है। बजनियाँ नट और ब्रजवासी नट। इस जाति का मूल (उत्पत्ति) कहाँ है और विभिन्न युगों में इनकी क्या स्थिति रही यह आज भी अन्वेषण का विषय है। वह अपने आप को भारत का मूल निवासी मानते हैं। इनमें गरीबी का स्वरूप सर्वाधिक होने के बाद भी ये अपनी परम्पराओं के साथ-साथ आज भी सचेष्ट हैं और इसी कारण अन्य जाति या प्रजाति में अपना वैवाहिक संबंध नहीं बनाते। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है कि नट सम्प्रदाय पिछले ढाई हजार वर्षों से भी अधिक समय से अस्तित्व में हैं। इसे तभी से अत्यंज या अछूत माना जाता रहा है। एक श्रेणी का होते हुए भी नट एवं करनट इन दो श्रेणियों में इनका विभाजन हुआ है और इसी करनट जनजाति के जीवन एवं संघर्षों को रांगेय राघव ने अपने उपन्यास 'कब तक पुकारूँ' में सजीवता के साथ चित्रित किया है। करनट जनजाति उपेक्षित एवं शोषित है। इनके पास जीवन बसर करने के नाम पर सिवाय तन के और कोई भी मिलकियत नहीं होती। इस

जनजाति में पुरुष औरत को वेश्या बनाकर धन अर्जित करते हैं। करनटों में इस पेशे को बुरा नहीं माना जाता क्योंकि उनके पास और कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं होता। रांगेय राघव ने इस भाव को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है- "औरत का काम, औरत का काम है। उसमें बुरा-भला क्या? कौन नहीं करती? नहीं तो मार-मार कर खाल उड़ा देगा। दरोगा तेरे बाप और खसम दोनों को जेल भेज देगा। फिर कमरा न रहेगा तो क्या करेगी? फिर भी तो पेट भरने को यही करना होगा।"[3]

अत: पेट की आग बुझाने के लिए इस जनजाति की महिलाओं को पर-पुरुष के हवस के आग में जलना पड़ता है।

करनट जनजाति में स्त्रियों के शोषण को रांगेय राघव ने बड़े बेबाकपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। मानव-मूल्य एवं नैतिकता किस हद तक गिर सकती है इसका चित्रण उपन्यासकार ने अपने शब्दों में 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास के माध्यम से किया है- "पुराने जमाने में यहाँ के करनटों की हर लड़की जब जवान होती थी तो पहले उसे ठाकुरों के पास रात बितानी पड़ती थी। फिर वह करनटों की हो जाती थी।"[4] इस तरह ऊँची जातियों के लोग इन करनट स्त्रियों के साथ अनैतिक संबंध तो बना लेते थे लेकिन वैवाहिक संबंध स्थापित करने में जाति प्रथा और छुआछूत का हवाला देते थे। रांगेय राघव ने इस तरह के प्रसंगों को उठाकर समाज में व्याप्त उन कुरीतियों का पर्दाफाश किया है जो समाज को हाशिये की ओर ढकेलना चाहती है। इस तरह रांगेय राघव ने करनट जाति के जीवन-शैली, रीति-रिवाज एवं जीवन संघर्ष को बड़ी ही मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है तथा इस जाति के प्रति संवेदना एवं सहानुभूति का संदेश दिया है।

अत: उक्त दोनों उपन्यासकारों ने अपने-अपने स्तर पर जनजाति जीवन के संघर्षों को बड़ी ही संजीदगी के साथ पाठकों के समक्ष रखा है।" देवेन्द्र सत्यार्थी ने यदि 'रथ के पहिये' उपन्यास के माध्यम से छत्तीसगढ़ के गोंड़ जनजाति के जीवन संघर्ष को दिखाया है तो रांगेय राघव ने 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास में राजस्थान के करनट जनजाति के शोषण को चित्रित किया है। दोनों ही उपन्यासों में दो अलग-अलग जनजातियों के संघर्ष हमें देखने को मिलती है एवं उनके उपन्यास के माध्यम से एक नई प्रेरणा, एक नई सोच हमें प्राप्त होती है।

संदर्भ :

1. सत्यार्थी देवेन्द्र 'रथ के पहिये' पृष्ठ- 57, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण: 1953 ई.

2. वही, पृष्ठ- 61
3. राघव रांगेय, 'कब तक पुकारूँ, पृष्ठ-03 राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली, संस्करण: 2004 ई.
4. वही, पृष्ठ- 05

सहायक प्राध्यापक हिन्दी
डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर
महाविद्यालय डोंगरगाँव
जिला-राजनांदगाँव छ.ग.
मो.- 9575229842

आदिवासी ध्रुव गोंड़ी, धर्म के गोत्र व वंशावली : एक परिचय

-सुश्री रेणुका ठाकुर

आदिवासी धर्म और संस्कृति में प्रकृति की पूजा की जाती है। आदिवासी ध्रुव गोंड़ी धर्म में वंशावली का निर्माण प्रकृति के पाँच तत्वों जल, वायु, आकाश, अग्नि, भूमि तथा सौरमंडल के सात ग्रह सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, मंगल, बुध, शुक्र, शनि पर आधारित है। इनमें पाँच गोत्र, पाँच कुल गुरू, और 25 देव होते हैं। गोत्र भाईयों के नाम वन्यजीवों और पक्षियों, वनस्पतियों पर आधारित होते हैं। पाँच कुल के लिए पाँच भूमि या गढ़ है जिनमें मुख्य हैं धमधागढ़, लांझीगढ़, बैरागढ़, चांदगढ़ और मंडलागढ़ है। सभी गोत्रों के लिए अपने गोत्र चिन्ह के जीवों को संरक्षित करना उनका कर्त्तव्य होता है परन्तु अन्य जीवों का सेवन कर सकते हैं। इस प्रकार प्रकृति का संतुलन व जैव विविधता संरक्षित रहती है।

सूर्यवंशी छेदैहा-(तमोगुणी)

इनका अंश पृथ्वी, गोत्र सूर्यवंशी भरतद्वाज, पूज्यभूमि अवंति देश है। सूर्यवंशी राजा जगत की तीन पटरानियाँ थी। उनके छः-छः पुत्र हुए जो छेदैहा कहलाये। गंगवंशी कन्या तुमरेकी, ओटी, सलाम, नेटी, कोड़प्पा और घांवरे; नागवंशी कन्या उनका उइका, कतलाम, कोर्राम, पोटाजगत, अरकारा, और कोहकोट्टा और चन्द्रवंशी कन्या से कुमर्रा, मातरा, पायला, वट्टी (ओड़े), तितराम और छेदइहा जगत उत्पन्न हुए।

सूर्यवंशी छेदैहा छः देव की पूजा करते हैं। यह देव हैं सोमतुला, पिण्डी तुला, जुंगा भद्रा, लिंगा, लाड़िका, उदयश्रीता, सूर्यवंशीयों का राजधानी गढ़ देवगढ़ में कोर्राम, डोंगरगढ़ में कुमर्रा, सालिकनगर में कतलाम, बालकी नगर में सलाम, चन्द्रगढ़ में उयका, चांदागढ़ में छेदइहा, हिरवनगढ़ में ओटी, प्रतापगढ़ में नेटी, कामठी में तुमरेकी, बालाघाट में कोड़प्पा, परसेदगढ़ में कोहकट्टा, पूना में धावरे, अधनगर में अरकरा, याता में वट्टी, झाझानगर में पोटा, महाड़ में पायला, भौदा बोडला में मातरा और मल्लार गढ़ में तितराम (बिलासपुर) है।

गोत्रराज नेताम (गंगवंशी) रजोगुणी :

इनका भुम्माटी वंश, जल अंश, गोत्र कश्यप, और कुल पूज्य चंद्र भूमि, स्थान मगध देश है। गंगवंशी के चार पुत्र पैदा हुए हैं-नेताम, टेकाम, छिंदराम और करियाम। यह चार देवताओं को पूजते हैं-नत्थु, केला, भार शंकर और गवरा। गंगवंश में कुरूम और मेघडंबर यह दो छत्र होते हैं। इनके ध्वज का रंग सफेद होता है। इनका गढ़ राजगद्दी लांजी है। इनका गढ़ लांजी में नेताम, देवकठार में टेकाम, धनगावं में छिंदराम, और अधगाँव में करियाम हैं।

टीकावंश (नागवंशी) तमोगुणी -

टीका वंश का आकाश अंश, गोत्र कश्यप पुलस्त्य, कुल पूज्य सूर्यभूमि और लिंग देश है। नागवंशी के साथ सात पुत्र उत्पन्न हुए-कुजांम मरई, खुरश्याम, धोपी मरई, गोटाम, पद्रांम, तारम (सेवता) गुज मरई। इनके सात देवता-अभ्रवर्ली, धनचक्र, ब्रम्ह कालवा जुंगेश्वर, निद्रा भोगी, सांभर मुनि, मदन टोव वीर। इनमें नाग छत्र, भंवर छत्र, और टीपन छत्र।

यह तीन छत्र होते हैं। नागवंशियों के ध्वज का रंग लाल है। इनका गढ़ मढ़ा मंडला में मरई, भंवरगढ़ में कुंजाम, चौरागढ़ में श्याम, परसगढ़ में खुरश्याम, हिरदे नगर में पद्रांम, रामनगर में तारम, और देवगढ़ में सेवता है और सभी में बड़ी राजगद्दी गढ़ मंडला है।

द्वाला वंश (चंद्रवंशी) सतोगुणी :

चंद्रवंशी का गोत्र पुहुप, वायु अंश द्वाल वंश, कुल पूज्य बृहस्पति और भूमि सिंधु देश है इनके पाँच पुत्र पैदा हुए जो हैं पोर्ते, पडोती, पुराम, पदाम और पेचाम (चचाम)। इनके पाँच देवता हैं-भुंगा, तिरवा, सिंह वाहिनी, बुढ़ारावर, मानिक सौंदा। इनके छत्र श्वेत छत्र है और ध्वज का रंग हरा है। चंद्रवंशी गढ़ पाँच हैं-मनीगढ़ में पोर्ते, मोतीगढ़ में पेचाम, बैरागढ़ में पडोती, चिचगढ़ में पदाम और बटकी गढ़ में पुराम होते हैं।

साक्षी सुमता अग्निवंश (तमो गुणी)

अग्निवंशी में शांडिल्य गोत्र अग्नि वंश, यज्ञ वंश, पूज्य शुक्र शनि और भूमि और भूमि स्थान राठिन देश है। यज्ञवंशी के तीन पुत्र हुए-शंडिल्य वंशी मरकाम, नीजइक वंशी खुसरो, और ससकी वंशी सोरी खुसरों हैं। ये तीन देवताओं की पूजा करते हैं-शंभू (महादेव), सालीब और साढ़देव। इनका एक स्वेत छत्र है। इनका ध्वज का रंग काला और राजगद्दी धमधागढ़ है। धमधागढ़ में मरकाम, नवागढ़ में खुसरो और रतनगढ़ में सोरी आते हैं।

निष्कर्ष :

आदिवासी धर्म, गोत्र वंशावली, अत्याधिक विस्तृत और गूढ़ता लिए है। इस संस्कृति में, आधुनिकता और अन्य धर्म संस्कृति से घुल-मिल जाना और इसका सुव्यवस्थित लिखित ग्रंथ और साहित्य उपलब्ध न होना एक विचारणीय तथ्य है।

सहा. प्राध्यापक
प्राणीशस्त्र थास,
डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय,
डोंगरगांव, (छ.ग.)

प्रकृति पुत्रों की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर

-श्रीमती प्रियांकी गजभिये

पुरातत्व विज्ञान में एक प्रचलित धारणा के अनुसार जमीन की उस परत को वैज्ञानिक सांस्कृतिक परत कहते हैं जिसमें मनुष्य के कार्यकलापों के चिन्ह मिलते हैं। उन गुफाओं में जहाँ आदिमानव निवास करते थे उन स्थानों पर पुरातत्वविदों को पत्थर के औजार राख, जीवाश्म, बर्तन के टुकड़े, आभूषण इत्यादि मिलते हैं जिनकी मदद् से आदिमानव समूहों का सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, जीवनचर्या को जानने का प्रयास किया जाता है। यही वैज्ञानिक सांस्कृतिक परत मानव जीवन के सांस्कृतिक इतिहास को रचती है। इस आदिम संस्कृति की परते विश्व के सभी कोनों में मिलती है। अनेक सम्परिवर्तनों के बावजूद आज भी विश्व में अनेक जनजातियाँ हैं, जिनमें आदिम संस्कृति के कई मूल तत्व अवशेषित है जिन पर लोक संस्कृति का कुछ विकसित तथा विशाल स्वरूप खड़ा है।

यह जनजातीय समाज हमें मानव विकास के प्रत्यक्ष अध्ययन में सहयोग करता है। प्रश्न यह उठता है, कि हजारों वर्षो बाद भी यह आज भी आदिम संस्कृति से आगे क्यों नही बढ़ सका? वस्तुतः अनेक प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक भौंगोलिक परिवर्तनों के बावजूद उन जनजातियों में आंशिक बदलाव की प्रक्रिया अत्यंत धीमी या नही है ऐसा उनकी मान्यताओं परंपराओं के प्रति गहरी आस्था तथा विश्वास के कारण है। ये बदलाव को तभी ग्रहण करते हैं, जब उन्हे विश्वास हो जाता है, कि बदलाव के कारण उनकी सहजता मौलिकता में कोई खास अंतर नही पड़ेगा। उनके पास धर्म की कोई स्पष्ट सारणियाँ नहीं हैं। ये सदैव जीवन को महत्व देते आये है। उनका अटूट विश्वास है कि जीवन बचेगा तो सब कुछ बचेगा जीवन को बचाकर रखने के मूल उद्देश्य के कारण ही शहरी सभ्यता से दूर आदिवासी एकान्त जंगल में रहते आए हैं। चूँकि आदिवासी समूह की प्रकृति पर पूर्ण आस्था है, एवं प्रकृति की गति तथा परिणति दोनों नैसर्गिक है। उदा. एक बार जिस बीज को जो मूल रंग रूप, गंध, और गुण मिल गया वह सदैव चीरकाल

तक वैसा ही रहता है। प्रकृति में कुछ नया करने की नैसर्गिक शक्ति नही है। एक आम का पेड़ सदैव आम ही देगा, सूर्य कभी पश्चिम से उदित नही हो सकता, चंद्रमा दिन में चांदनी नही दे सकती, समुद्र खारा ही रहेगा, अग्नि में तपन, बादलों से ही वर्षा, दिन के बाद रात, जन्म के बाद मृत्यु प्रकृति के मूलाधार है जिनका चक्र चलता रहता है। प्रकृति पर अटूट विश्वास ही आदिमानव समूह को बदलाव से विमुख किये है, परिणामस्वरूप वे आज इस आधुनिक में भी आदिम संस्कृति को स्वयं में सहेज हैं। प्रकृति के सानिध्य में वे प्रसन्न रहते हैं इसलिये आदिमजन प्रकृति पुत्र कहे जाते हैं। उनका यही प्राकृतिक जीवन हम जैसें सभ्य समाज के लिये आकर्षण तथा कौतुहल की वस्तु बन जाती है।

प्राकृतिक जीवन का एक सबसे बड़ा आधार प्रकृति की रहस्यमयी शक्तियों के प्रति सहज विश्वास हैं, जिस मान्यता के कारण आदिम समाज के लोग वृक्षों नदी, पहाड़, घाट जंगल में किसी न किसी देवी-देवता का वास मानते हैं। यह प्राकृतिक आदिम जीवन की स्मृति तथा स्वप्न की याद दिलाते हैं। भीलों के बांसदेव, खुंटदेव, गोंड़ो में बुढ़ादेव, दुल्हादेव, उरांव में सरना देवी ऐसे ही रहस्यमयी शक्तियों की प्रतीक स्वरूप पूजे जाने वाले देवी देवता हैं। ये आत्मा की सत्ता को भी स्वीकारते हैं, इनकी दृष्टि में एक अच्छी और एक बुरी आत्मा हैं, अच्छी आत्मा कल्याण में रत रहती है, तथा बुरी आत्मा महामारी, कष्ट, आपदा को बुलाती है। पराशक्तियों की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता से सब कुछ संचालित होता है। अतः इन शक्तियों से आदिवासी सदैव भयभीत रहते हैं। उनको संतुष्ट करने वे बकरे-चुंजे की बलि तक चढ़ाते हैं। कई जनजातियाँ पशु पक्षियों में देवी देवताओं का वास मानती हैं। जैसे बैगा जनजाति सुअर पूजक हैं। विश्व की कई जनजातियाँ मगर, कच्छप, बाघ, गाय, बैल, भैंस नंदी, मछली पूजक है। पितर-पूजा तथा सूर्य-चन्द्र पूजा भी की जाती है। सूर्य और चन्द्र प्रकृति की दो आँखे हैं। ये अमरता तथा गति का प्रतीक हैं। पृथ्वी से सूर्य तथा चंद्रमा का गहरा रिश्ता है। पृथ्वी माता है, चंद्रमा ज्वारभाटा के रूप में समुद्र को संचालित करता है। चन्द्रमा घटता-बढ़ता है, जिसका मनुष्य के मन पर भी प्रभाव पड़ता है। यह सब मनुष्य के प्राकृतिक जीवन की आदिम उपलब्धियाँ हैं, जिसे मनुष्य ने अपने ज्ञान अनुभव से प्राप्त किया है।

भौगोलिक विभिन्नताओं के अनुसार आदिम समुदाय अपनी शारीरिक क्षमताओं को अनुकुलित करते आये हैं। बहुत लंबे समय तक एक ही प्राकृतिक जलवायु में निवास के कारण इनमें प्रजातियों का एक खास वर्ग विकसित हो जाता है। जैसे श्वेत प्रजाति शीत क्षेत्रों में तथा नीग्रोइड लोग विषुवत रेखीय ग्रीष्म

तक वैसा ही रहता है। प्रकृति में कुछ नया करने की नैसर्गिक शक्ति नही है। एक आम का पेड़ सदैव आम ही देगा, सूर्य कभी पश्चिम से उदित नही हो सकता, चंद्रमा दिन में चांदनी नही दे सकती, समुद्र खारा ही रहेगा, अग्नि में तपन, बादलों से ही वर्षा, दिन के बाद रात, जन्म के बाद मृत्यु प्रकृति के मूलाधार है जिनका चक्र चलता रहता है। प्रकृति पर अटूट विश्वास ही आदिमानव समूह को बदलाव से विमुख किये है, परिणामस्वरूप वे आज इस आधुनिक में भी आदिम संस्कृति को स्वयं में सहेज हैं। प्रकृति के सानिध्य में वे प्रसन्न रहते हैं इसलिये आदिमजन प्रकृति पुत्र कहे जाते हैं। उनका यही प्राकृतिक जीवन हम जैसें सभ्य समाज के लिये आकर्षण तथा कौतुहल की वस्तु बन जाती है।

प्राकृतिक जीवन का एक सबसे बड़ा आधार प्रकृति की रहस्यमयी शक्तियों के प्रति सहज विश्वास हैं, जिस मान्यता के कारण आदिम समाज के लोग वृक्षों नदी, पहाड़, घाट जंगल में किसी न किसी देवी-देवता का वास मानते हैं। यह प्राकृतिक आदिम जीवन की स्मृति तथा स्वप्न की याद दिलाते हैं। भीलों के बांसदेव, खुंटदेव, गोंड़ो में बुढ़ादेव, दुल्हादेव, उरांव में सरना देवी ऐसे ही रहस्यमयी शक्तियों की प्रतीक स्वरूप पूजे जाने वाले देवी देवता हैं। ये आत्मा की सत्ता को भी स्वीकारते हैं, इनकी दृष्टि में एक अच्छी और एक बुरी आत्मा हैं, अच्छी आत्मा कल्याण में रत रहती है, तथा बुरी आत्मा महामारी, कष्ट, आपदा को बुलाती है। पराशक्तियों की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता से सब कुछ संचालित होता है। अतः इन शक्तियों से आदिवासी सदैव भयभीत रहते हैं। उनको संतुष्ट करने वे बकरे-चुंजे की बलि तक चढ़ाते हैं। कई जनजातियाँ पशु पक्षियों में देवी देवताओं का वास मानती हैं। जैसे बैगा जनजाति सुअर पूजक हैं। विश्व की कई जनजातियाँ मगर, कच्छप, बाघ, गाय, बैल, भैंस नंदी, मछली पूजक है। पितर-पूजा तथा सूर्य-चन्द्र पूजा भी की जाती है। सूर्य और चन्द्र प्रकृति की दो आँखे हैं। ये अमरता तथा गति का प्रतीक हैं। पृथ्वी से सूर्य तथा चंद्रमा का गहरा रिश्ता है। पृथ्वी माता है, चंद्रमा ज्वारभाटा के रूप में समुद्र को संचालित करता है। चन्द्रमा घटता-बढ़ता है, जिसका मनुष्य के मन पर भी प्रभाव पड़ता है। यह सब मनुष्य के प्राकृतिक जीवन की आदिम उपलब्धियाँ हैं, जिसे मनुष्य ने अपने ज्ञान अनुभव से प्राप्त किया है।

भौगोलिक विभिन्नताओं के अनुसार आदिम समुदाय अपनी शारीरिक क्षमताओं को अनुकुलित करते आये हैं। बहुत लंबे समय तक एक ही प्राकृतिक जलवायु में निवास के कारण इनमें प्रजातियों का एक खास वर्ग विकसित हो जाता है। जैसे श्वेत प्रजाति शीत क्षेत्रों में तथा नीग्रोइड लोग विषुवत रेखीय ग्रीष्म

क्षेत्रों में पाये जाते हैं। एक ओर बर्फीले क्षेत्रों में एस्कीमों हैं, मध्य अफ्रीका के पिग्मी जनजाति, कालाहारी मरूस्थल के बुशमैन जनजाति पठारी क्षेत्रों के खिरगीज जनजाति प्रमुख रूप से उल्लेखित हैं। भारत में भी जनजातियों का वितरण भौगोलिक विभिन्नताओं के अनुरूप है। जिनमें शारीरिक, सामाजिक, धार्मिक विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। जैसे मध्य क्षेत्र के गोंड एवं दक्षिण भारत के गोंड समुदाय में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती हैं। भारत के उत्तरी क्षेत्र में पाई जाने वाली नागा, कूकी, मिजो, गारो, खासी, भोटिया आदि जनजाति पहाड़ी एवं ठंडे भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार, वहीं मध्य भारतीय मैदानी क्षेत्रों में संभाल उराव गोंड़, कोरकु, सहरिया जनजाति तथा राजस्थान के मरूस्थालीय क्षेत्रों में मीणा, भील, गरासिया, दक्षिण भारत में चेंचु कापू, टोंडा कोटा, कुरूबा पनियन कादर आदि प्रमुख जनजातियाँ हैं। इन भौगोलिक विभिन्नताओं का उनके निवास पर भी प्रभाव पड़ता है। बस्तर के मुड़िया-माड़िया घने जंगलों में, कोरकू गाँव में कतारबद्ध ढाना बनाकर किसी कस्बे के नजदीक, भारिया परालकोट जमीन से ढाई हजार फूट नीचे भील गरासिया पथरीली, मरूस्थली जंगलों में, बैगा जानवरों के साथ जंगलों में, भील-भीलाला सड़क से दूर-दूर घर बनाकर रहते हैं। जलवायु तथा भूमि के अनुरूप आदिमजन अपने रहने के मकान बनाते हैं, ताकि वे जलवायु के प्रकोपों को आसानी से सहन कर सके और जीवन सरलता से चला सके।

आदिम संस्कृतियों के स्वरूप गढ़ने में आस्था, विश्वास, जीवन शैली, प्रथा, परंपराओं का बहुत बड़ा हाथ है। संस्कृति में मनुष्य का समग्र आचरण समाहित होता है। यह कोई बाहरी वस्तु ना होकर मनुष्य के संस्कार में समाहित होती है। आदिवासी संस्कृति के दर्शन हमें उनके जन्म, विवाह, मृत्यु संस्कारों में होते हैं। मेले-मड़ई, तीज-त्यौहार, पर्व-उत्सव रीति-रिवाजों, परंपराओं-प्रथाओं के निर्वाह में आदिम संस्कृति की अत्यंत सूक्ष्म तत्वों को देखा जा सकता है, जैसे बस्तर का दशहरा जिसमें 75 दिनों की निश्चित अवधि, काछनगादी से आरंभ, मुड़िया दरबार में समापन, स्थानीय आदिवासियों द्वारा रथ को खींचना सबकुछ निश्चित रीति-रिवाजों के तहत् होता है, जिसमें परिवर्तन संभव नहीं। आदिम समुदायों की कला परंपरा भी उनके अनुष्ठानों एवं सामाजिक सरोकारों में देखी जा सकती है। नृत्य, गीत, संगीत, चित्र, शिल्प आदि की परंपरा लगभग प्रत्येक जनजाति समुदाय में पायी जाती है। प्रत्येक जनजाति का कोई न कोई मूल स्वर होता है, जिस पर उनकी समस्त कला परंपरा अवलंबित रहती है। जनजातीय कला किसी बाहरी आकर्षण या प्रेरणा से नही अपितु सहज आंतरिक भागों की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में सृजित है, इसलिए आदिम समुदाय अपनी कला संस्कृति

के निर्वाह में परम-आनंद, सुख-संतुष्टि का अनुभव करता है, जिसे वे अनंत काल तक ऐसी ही सहेज कर रखना चाहते हैं। घोटूल, मुड़िया जनजाति का ऐसा ही एक सांस्कृतिक केन्द्र है, जहाँ मुड़िया आदिवासी समुदाय के युवक-युवतियों को अपनी संस्कृति के साथ सहजीवन का पाठ पढ़ाया जाता है।

आदिम समुदाय अपने प्राकृतिक आवास में आनंद की अनुभूति करते हैं एवं वहाँ से बाहर नहीं निकलना चाहते, तो क्या उन्हें ऐसे ही छोड़ देना उचित होगा? छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिला के अबूझमाड़ क्षेत्र में विशेष पिछड़ी जनजाति अबूझमाड़िया को संरक्षण देने उस क्षेत्र को वर्षों तक प्रतिबंधित क्षेत्र रखा गया ताकि आदिम संस्कृतिक को आधुनिकता से दूर मौलिक रूप में सहेजा जा सके ऐसे अनेक धुर जगंली क्षेत्र आज तक अबूझ बने हुए हैं। आवश्यकता है वहाँ इन आदिवासियों के घर तक जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं को पहुंचाया जाए। सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की नीति में परिवर्तन लाया जाये। चूंकि वे शासकीय योजनाओं से अनिभिज्ञ हैं, आवागमन के साधनों से दूर हैं, इसलिए राशन की सुविधा स्वास्थ्य सेवा आदि मोबाईल वाहनों के माध्यम से उनके निकट गाँव घर तक पहुंचाया जाना चाहिए। यद्यपि इन पिछड़े आदिवासी क्षेत्रों में विकास कार्य आरंभ हो चुका है, स्वास्थ्य केन्द्र, सड़क, शिक्षा, लाल आंतक पर लगाम देने रक्षा व्यवस्था, गाँव में सर्वे का कार्य सबकुछ आरंभ हो गया हैं। इन प्रकृति पुत्रों की मानसिकता को बदलना होगा इसके लिये उन्हें ज्यादा से ज्यादा योजनाओं से लाभान्वित करना होगा तभी हम उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ने में सफल हो पायेगें। प्रख्यात् मानव शास्त्री वेरियर एल्विन महोदय द्वारा अपनी पुस्तक 'मुड़िया एण्ड देयर घोटूल' में जनजातियों को संरक्षित करने के उद्देश्य से श्राष्ट्रीय उपवनश् की अवधारणा प्रस्तुत की गई है। जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनजातियों के संर्वागिण विकास हेतु सर्वथा अनुचित थी अनुचित है। जनजातियों को मुख्य धारा से जोड़ने हेतु भारतीय संविधान में प्रदत्त समस्त मानव अधिकारों पर उनका बराबर का अधिकार है, जो उन्हें निःसन्देह प्राप्त होना चाहिए।

संदर्भ :

1. आदिवर्तः छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियाँ- बसंत निरगुणे
2. महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इंदौर
3. समग्र छत्तीसगढ़- छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
4. आदिवासी समाज एवं संस्कृति-डॉ. शैला चव्हाण, रोशनी पब्लिकेशन कानपुर।

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, शासकीय
डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर
स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोंगरगाँव, जिला-राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़

आदिवासियों के स्थानीय पौधे

-श्री मन्नूलाल नायक

छिंद का वनस्पतिक नाम फोनिक्स सिलवेस्ट्रीस है।

विवरण

फीनिक्स सिल्वेस्ट्रिस की ऊंचाई 4 से 15 मीटर और व्यास 40 सेंटीमीटर है कैनरी आइलैंड डेट पाम जितना बड़ा नहीं है लेकिन लगभग इतना ही है और उससे मिलता-जुलता है।

पत्तियाँ 3 मीटर लंबी धीरे से मुड़ी हुई होती हैं। आधार के पास 1 मीटर पेटीओल्स पर एसेंथोफिल के साथ। पत्ती का मुकुट 10 मीटर चौड़ा और 7-5 से 10 मीटर लंबा होता है जिसमें 100 पत्ते होते हैं।

पुष्पक्रम 1 मीटर तक बढ़ता है जिसमें सफेद उभयलिंगी फूल एक बड़े लटकते हुए पुष्पक्रम के रूप में बनते हैं। एकल बीज वाला फल बैंगनी-लाल रंग में पक जाता है।

छिंद भारत के भू-भागों में नदियों और नालों के किनारे पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पेड़ है जिसके कारण छिंदवाड़ा नगर की एक विशेष पहचान है। इसे जंगली खजूर, शुगर डेट पाम, टोडी डेट पाम, सिल्वर डेट पाम, इंडियन डेट पाम आदि नामों से भी जाना जाता है।

वानस्पतिक भाषा में इसका नाम 'फोनिक्स सिल्वेस्ट्रिस' है जो एरेकेसी परिवार का सदस्य है।

यह पेड़ उपजाऊ से लेकर बंजर मैदानी भूमि में सामान्य से लेकर अत्यंत सूखे मैदानी भागों में सभी तरह की मिट्टी में आसानी उग से जाता है। इसके धारीदार तने और उस पर पत्तियों का ताज धारण करने के बाद यह किसी आकर्षण से कम प्रतीत नहीं होता है।

आदिवासियों द्वारा जीवन में इनका सामान्य उपयोग

काँटेदार पत्तियों वाले छिंद का उपयोग झाड़ू, चटाई, टोकरी आदि बनाने के लिए तो होता ही है। आम जन-जीवन में छिंद पत्ते से तैयार मौर (सेहरा) का उपयोग भी शादी विवाह में होता है। छिंद फल का उपयोग जहां गुटका व्यवसायी सुपारी के विकल के रूप में करने लगे हैं, वहीं छिंद के तना और पत्तों का उपयोग घर बनाने में भी होता है।

बस्तर में सल्फी वृक्षों के तेजी से सूखने तथा सल्फी रस की कमी के चलते ही लोग छिंद का रस निकालकर बेचने लगे हैं।

वहीं आंध्रप्रदेश में ताड़ रस निकालने वाले दो सौ से ज्यादा परिवार यहां आकर छिंदरस निकाल रूपए कमा रहे हैं।

बेतरतीब तरीके से रस दोहन के चलते छिंद पेड़ समय पूर्व ही सूखने लगे हैं। छिंद रस का उपयोग अब तक लोग नशे के रूप में कर रहे हैं। बस्तर में छिंद की अधिकता व गलत तरीके से रस दोहन को देखते हुए कृषि कुम्हरावंड ने यहाँ के आदिवासियों को छिंद गुड़ बनाने की योजना तैयार की है।

गन्ने की शक्कर से सेहतमंद होते हैं छींदी की चीनी

कुछ स्थानों पर इसके तनों में छेद करके इससे एक स्वादिष्ट पेय प्राप्त किया जाता है जो काफी कुछ ताड़ी से मिलता-जुलता होता है जिसे छींदी कहते हैं।

अन्य स्थानों पर इस मीठे रस से गुड़ भी तैयार किया जाता है जिसे पाम जगरी के नाम से जाना जाता है जो सामान्य गन्ने से प्राप्त शक्कर से कहीं अधिक सेहतमंद होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में जब कोई छींद का पेड़ आंधी और तूफान से टूट कर गिर जाता है तब ग्रामीण चरवाहे इसके शीर्ष भाग को काटकर तने का कोमल हिस्सा निकालते हैं जो देखने में तथा स्वाद में पेठे से मिलता-जुलता होता है। इसे खाने का एक अलग ही मजा होता है।

एक अन्य नज़रिए से देखें तो इसके कोमल जाइलम में स्टार्च का भंडार होता है जिससे साइकस की तरह ही साबूदाना निर्माण के लिए प्रयोग किया जा सकता है लेकिन यह तभी संभव है जबकि किसान इसे खेती के साथ जोड़कर अपना ले।

माडिया (रागी)-वनस्पतिक नाम-एलुसीन कोराकोना

फैमली-पोएसी

यह भारत का तीसरा महत्वपूर्ण अनाज है इसे दक्षिण भारत के पहाड़ी इलाकों में 75% सीमान्त क्षेत्र में उगाये जाते हैं। इनकी खेती खाद्य फसल के

रूप में आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ में की जाती है।

इनके मुख्य विशेषताएँ-

1. यह सूखे क्षेत्रों में खेती हेतु शक्तिशाली फसल है।
2. यह बहुत कम वर्षा की परिस्थितियों एवं बहुत भयंकर सूखा का सामना कर उग जाता है।
3. रागी कण को कई वर्षों लगभग 50 वर्ष से अधिक बिना खराब किये नमी से सुरक्षित रख सकते हैं।
4. इस फसल को खरीफ सीजन में बोया जाता है। आदिवासी क्षेत्र में इस फसल को बहुतायत में बोया जाता है जिनका उपयोग अपनी दैनिक जीवन में माड़िया पेज रोटी एवं खाद्यान्न के रूप में करते हैं।

माड़िया पेज बनाने की विधि एवं सामग्री :

सामग्री

1. रागी
2. चावल
3. स्वादानुसार नमक
4. पानी

विधि :

-रागी और चावल को एक साथ मिलाकर हम मिक्सी जार में पीस लेंगे।

-इस पिसान को सामान्य पानी में मिलाकर 4-5 घंटे तक या रातभर के लिए ढककर रख देंगे। (इस घोल में खट्टापन आता है) इसमें एक गिलास पानी डालकर उबलने देंगे, इसमें एक मुठ्ठी चावल डालकर 5 मिनट तक पकाएँ।

-इसके बाद घोल को चम्मस चलाते हुए उबलते पानी डालकर 10-12 मिनट तक पकाएँ।

-पकते हुए गाढ़ा होने लगेगा तब गैस बंद कर दें।

-एक चम्मच में निकल लेंगे फिर गिलास में निकालकर परोसेंगे।

नोट-पुराने समय में माड़िया पेज चूल्हे पर हांड़ी में बनाते थे किन्तु वर्तमान समय में इसे मिक्सी जार में पीसकर गैस पर भी बना सकते हैं।

माडिया पेय के फायदे -

आदिवासियों का यह मुख्य पेय पदार्थ होता है जो एक साथ प्यास, भूख, गरमी एवं थकान मिटाता है एवं साथ ही साथ रोग प्रतिरोधक एवं पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है।

-माड़िया पेय जिसमें कार्बोहाइड्रेट की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है जिसका सेवन करने से एक साथ प्यास, भूख, गरमी एवं थकान मिटाता है इस कारण आदिवासी लोग ज्यादा समय तक कार्य करने में सक्षम होते हैं।

-इसमें 80% कैल्सियम की मात्रा पाई जाती है जो हड्डी को मजबूती प्रदान करता है।

-माड़िया पेज में आयरन की भरपूर मात्रा उपस्थित होती है जिनका सेवन करने से ब्लड की कमी को 15-20 दिनों में दूर किया जा सकता है।

-यह साथ ही साथ ब्लड प्रेशर को भी नियंत्रित करता है। इनका प्रतिदिन रोटी बनाकर खाने एवं इनके साथ एक गिलास नींबू-पानी पीने से ब्लड प्रेशर की समस्या जल्द हो दूर हो जाती है।

-माडिया पेज डायबीटीज की बीमारी में विशेष रूप से दवाई के रूप में उपयोगी है।

सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)
शास. डॉ. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर
महाविद्यालय, डोंगरगांव (छ.ग.)

TRIBAL SOCIETY : CULTURE AND LITERATURE

-Miss. Chanchal Stela Kujur

Some part of India's population lives in dense forests, hills, valleys, coastal areas away from cities and plain villages. Their socio-economical, educational and health development is lagging behind in comparison to other societies, they are called tribal society. Many special provisions have been made in the Indian constitution with the aim of moving them towards development by giving them the name of scheduled tribes and bringing them at par with the main stream of the society. Anthropological survey of India has identified 635 tribal groups and their sub-castes in the country. The total population of India as per census 2011 was 121,50,69,573 in which the population of scheduled tribes was 10,42,81,037 that is 8.61% of total population of the country belonged to the scheduled tribe. In Chhattisgarh, according to census 2011 the total population of scheduled tribes in the state is 78,22,902. About one third of the total population of the state (30.62%) belongs to the scheduled tribes. Of these, the highest number of 72 lakhs 31 thousand 82 are living in rural areas. The union cabinet chaired by Prime Minister Mr. Narendra Modi approved the inclusion of 12 caste communities of Chhattisgarh in the scheduled tribes list. After these caste communities are included in the list of scheduled tribes of Chhattisgarh, they will start getting the benefit of the schemes run by the government for scheduled tribes. Scholarships,

concessional loans, hostel facilities for scheduled tribe boys and girls along with the reservation in government service and educational institution will be available.

"India is a unity of diversity of culture", that is most important feature of Indian society. Tribal culture is one of them which show the unique identity of the tribal population in the nation. Tribal dialect, rituals practices, belief system, customs and tradition are all important aspect of tribal culture and placed in unique position in the Indian society and culture.

A)TRIBAL RITUALS : BIRTH, DEATH & PURIFICATION RITUAL

Birth Ritual : Essential and most important tradition among the tribes. One of village mukhiya (head) or respective tribe head purify child with turmeric water, fried rice and white thread. Purpose of this ritual is to make child a member of their own tribe and make relation with any one of their ancestor or present family member or with any relatives.

Death Ritual : The process uses of turmeric water in all cases of ritual observation. Other requirement is washing clothes, ash water, mustard oil etc. is all considered as holy water.

Purification Ritual : The tribal belief inter-tribe or inter-caste marriage without consent of parent and society is illegal which is believed that it defiles their culture that need to be purified by the respective village mukhiya.

B) CUSTOM AND TRADITION :

According to Bogaurds- "Marriage is an institution for women and men to enter family life". Marriage prevalent in the tribes monogamy and polygamy.

According to Lucie Mayer- "The family is a family group where parents and children live together.

Types of family in tribal society :-

1. Based on the number of members central, joint and expanded family.
2. On the basis of family power matriarchal family and patriarchal family.
3. Based on the nature of marriage blood connection marriage, monogamy and polygamy.
4. On the basis of lineage maternal family and paternal family.

The beauty of the cultural feature of tribal is contained in the jewellery which are made up of gold, silver, iron, bronze, bamboo, lacquer ornaments are popular for makeup. It is also characterized by religious belief, philosophical thought, aesthetic sense and social contemplation. Some of them which are prevalent in Chhattisgarh are lurki, kardhan, sutia, pery,banhuta, mundri etc. One of unique example of public paint style is tattoo. It is the only jewellery which lives with the women till death. In this context it is also called chirsangini. It is believed in these people that tattooing is used to prove the good deeds of a person after death.

Apart from the basic requirements of the tribes beverages are also part of tribal culture. Different types of drinks are found on the bask of clan in the tribal society.

Youth dormitory : It is tribal organization, a social institution where unmarried youths learn related to social customs and traditions and contribute to the development of their society through this.

Clan : Highly valued in tribal society. All the tribes are divided into different clan. The tribe is called a group of many clans which is made up of parents or relatives of the father. It is based on the imagination of a common ancestor. This ancestor can be real, mythical or imaginary.

Some tribal belief are as fallow :-

1) **Bongaism** : The religion of tribal society is based on

bongaism. Bonga is a power that exists everywhere. Tribal society believe that it gives power to oppresses evil, it inspire for welfare activities etc. it is an expression of an uncharted and super natural power with no definite form and existence of this world.

2) **Taboo** : Unwritten prohibition laws of the tribe community. The tribal society strictly adheres to taboo.

Tribal festivals dance, drama, fairs are the prominent culture of tribal society.

Tribal Literature : Tribal literature is nothing but the folklores and oral stories and poems of the tribal community. To search for identity, exposing the past and the present from the exploitation of outsiders and threats to the tribal identity and crisis, the tribal literature started it is not for their stories and poems. However in the era of liberalization where the need for water, forests, land and the primary source of the tribe increases day by day, which led to the displacement of plethora of tribes across the country. In this context tribal literature not bring forward their songs and poems but also provide a means to protect their identity and existence in the era where they suffer from exploitation. Literature of tribal society in Chhattisgarh which are based on muriya tribe written by Warrior Elwin which is named as "The Muriya and their Ghotul". "The Tribal Economy" written by Daya Shankar Naag is based on the life of Baigas tribes. "The Abujhmahis" by T.B. Nayak, "The Maria Gonds of Bastar" by George Griersonand many more books were written related to Chhattisgarh tribes.

ASST. PROFESSOR (CHEMISTRY)
GOVT.DR.B.S.B.A. PG.COLLEGE DONGARGOAN
DIST:- RAJNANDGAON, CHHATTISGARH

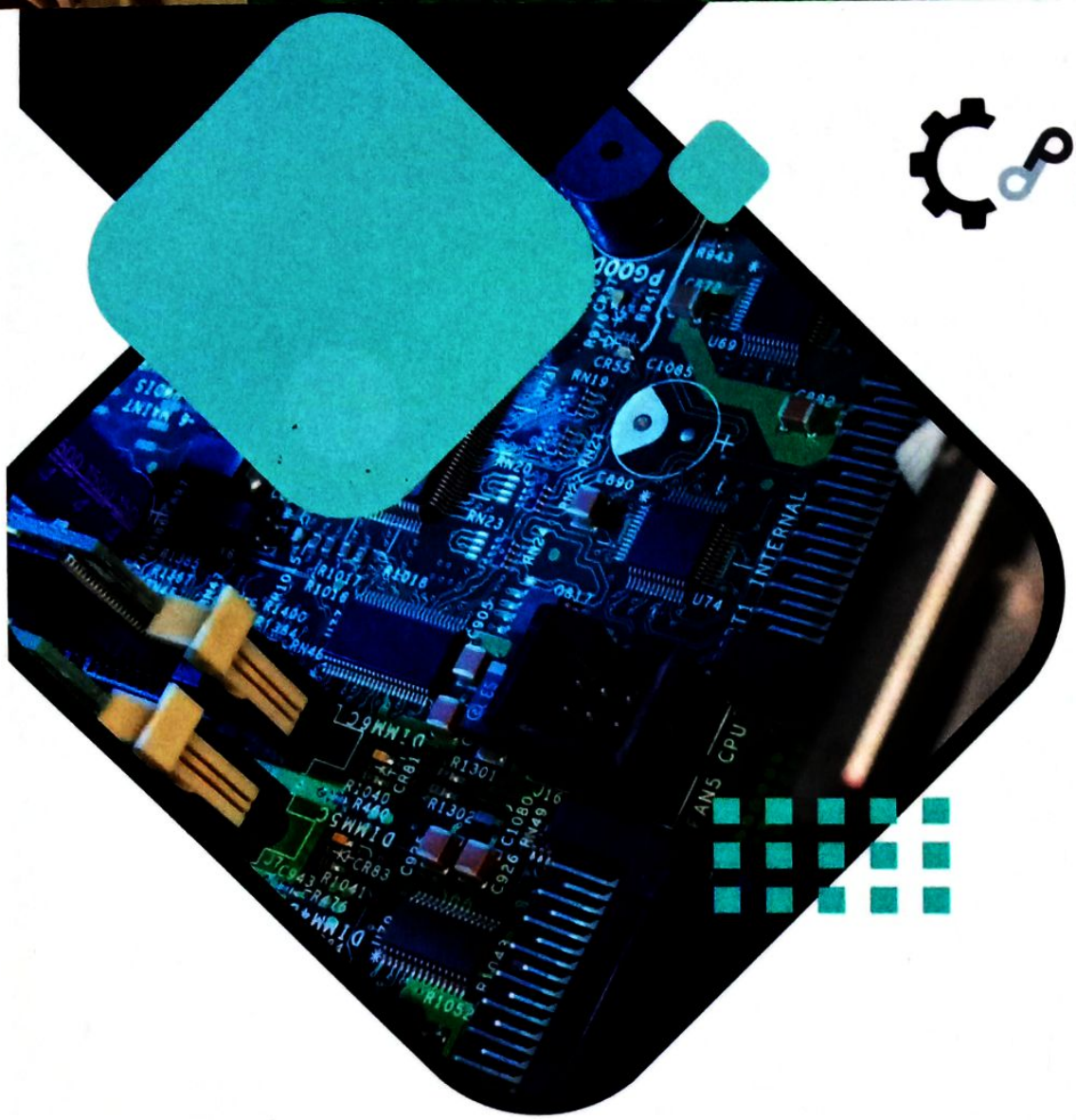

PROBECELL PRESS

ROLE OF APPLIED SCIENCES IN SOCIAL IMPLICATIONS

VOLUME D: MATHEMATICS & COMPUTER SCIENCE

HEMANT KUMAR SAW
KAVITA SAKURE
SURESH KUMAR PATEL
PRAMOD KUMAR MAHISH
DAKESHWAR KUMAR VERMA
RAJU KHUTTEY

List of Contributors

Author	Affiliation
Ajay Kumar Sharma	Seth Phoolchand Agrawal Smriti Mahavidyalaya, Nawapara-Rajim
Akash Soni	Research Scholar, Department of Mathematics, Kalinga University, Naya Raipur, C.G.-492101, India.
Anil Kashyap	College of Food Technology, IGKV Raipur (C.G.)
Anindita Chakraborty	Bhilai Institute of Technology, Durg, C.G.
C. Ramesh Kumar	Department of Mathematics, Rungta College of Engineering and Technology, Bhilai, C.G.-490024, India.
Chetan Kumar Sahu	Govt Dr. Baba Saheb Bhimrao Ambedkar PG College Dongargaon, Rajnandgaon (C.G.)
Chuleshwar Patel	Department of Mathematics, Govt. J. Yoganandam Chhattisgarh College Raipur (C.G.) - 492001, India
Hemant Kumar Pathak	School of Studies in Mathematics, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur (C.G.) 492010, India
Hemant Kumar Saw	Department of Mathematics, Government Digvijay Auto.P.G. College, Rajnandgaon (C.G) India
Iti Sao	Department of Mathematics, Government V. Y.T.Auto.P.G.College, Durg Chhattisgarh, India
Jaynendra Shrivas	Department of Mathematics, Govt. V.Y.T. PG Autonomous College, Durg (C.G.) India 491001
Kailsh Kumar Dewangan	Department of Mathematics, Govt. Digvijay Auto. P.G. College, Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
Kavita Sakure	Department of Mathematics, Govt. Digvijay Auto. P.G. College, Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
Lakshman Dewangan	Department of computer science, Govt. Digvijay Autonomous P.G. College, Rajnadgaon, Chhattisgarh, India.

Role of Applied Sciences in Social Implications
Volume D: Mathematics & Computer Science

Chapter 12

Uniqueness and Existence of Fixed Point for Pseudo-contractive Mapping and 1-set Contractive in Real Banach Space

Chetan Kumar Sahu[a]

[a]*Govt Dr. Baba Saheb Bhimrao Ambedkar PG College Dongargaon, Rajnandgaon (C.G.)*

Abstract. The purpose of this paper is to study the uniqueness and existence of fixed point for a class of nonlinear mappings defined on a real Banach space, which, among others, contains the class of separate contractive mappings, as well as to see that an important class of 1- set contractions and of pseudo-contractions falls into this type of nonlinear mappings. As a particular case, we give an iterative method to approach the fixed point of a non- expansive mapping. Later on, we establish some fixed point results of Krasnoselskii type for the sum of two nonlinear mappings where one of them is either a pseudo- contraction or a 1- set contraction and the another one is completely continuous, which extend or complete previous results.

2020 Mathematics Subject Classification: Primary 47H10; Secondary 54H25
Keywords: Pseudo- contractive mappings, Fixed points, Krasnoselskii fixed point theorem, Measures of non- compactness.

1. Introduction

From a mathematical point of view, many problems arising form diverse areas of natural science involve the existence of solutions of nonlinear equations with either the form

$$Cv + Dv = v, v \in P \text{ or } Cv = v, v \in P \tag{1.1}$$

where P is a convex and closed subset of a Banach space X, and $C; D: P \to X$ are nonlinear mappings. Fixed point Theory plays an important role in order to solve Eqs. 1.1. This Theory has two main branches: On the one hand we may consider the results that are obtained by using topological properties and on the other hand those results which may be deduced from metric assumptions.

Regarding the topological branch, the main two theorems are Brouwer's Theorem and its infinite dimensional version, Schauder's fixed point theorem. In both theorems compactness plays an essential role. In 1955, Darbo [11] extended Schauder's theorem to the setting of non- compact operators, introducing the notions of k- set- contraction with $0 \leq k < 1$.

Concerning the metric branch, the most important metric fixed point result is the Banach contraction principle. Since 1965 considerable effort has been done to study the fixed point theory for non- expansive mappings (for instance see [12,13]).

Although historically the two branches of the fixed point theory have had a separated development, in 1958, Krasnoselskii [14] establishes that the sum of two operators $C + D$ has a fixed point in a nonempty closed convex subset E of a Banach space $(X, \|.\|)$, whenever

Email address: ccpu123@gmail.com (Chetan Kumar Sahu)

1. $Cx + Dy = E$ for all $x; y \in E$
2. E is bounded
3. C is completely continuous on E
4. D is a k- contraction on X with $0 \leq k < 1$.

In this paper, we study the existence and uniqueness of fixed point for a class of nonlinear mappings, which, among others, contains the class of separate contractive mappings [15]. Moreover, we show, without invoking degree theory, that an important class of- semi- closed 1- set contractions as well as an important class of pseudo- contractive mappings, has a unique fixed point. Later we use the results obtained to establish new fixed point results of Krasnoselskii type for the sum of two nonlinear mappings where one of them is either a 1- set contraction, or a pseudo- contraction and the other one is completely continuous, which extend or complete previous results.

2. Preliminaries

This section is devoted to some basic notations, definitions, lemmas and prepositions which are needed for the further study of this article.

Notations: we will denote by $B_R[x_0]$ and $S_R[x_0]$, the closed ball, and the sphere, with radius R and centre $x_0 \in X$, respectively.

Definition 2.1. *Let $(X, \|.\|)$,be a Banach space and $B(X)$ the family of bounded subsets of X. By a measure of non-compactness on X, we mean a function ϕ: $B(X) \to R^+$ satisfying:*

1. $\phi(\bar{\Omega}) = \phi(\Omega)$
2. $\phi(\Omega) = 0$ *if and only if* Ω *is relatively compact in* X
3. $\phi(\Omega_1 \cup \Omega_2) = \max(\phi(\Omega_1), \phi(\Omega_2))$
4. $\phi(conv(\Omega)) = \phi(\Omega)$ *for all bounded subsets* $\Omega \in B(X)$, *where conv denotes the convex hull of* Ω.
5. *for any subsets* $\Omega_1, \Omega_2 \in B(X)$ *we have*

$$\Omega_1 \subset \Omega_2 \implies \phi(\Omega_1) \leq \phi(\Omega_2)$$

6. $\phi(\Omega_1 + \Omega_2) \leq \phi(\Omega_1) + \phi(\Omega_2)$
7. $\phi(\lambda\Omega) = |\lambda|\phi(\Omega)$ *for* $\lambda \in R$ *and* $\Omega \in B(X)$

Definition 2.2. *A mapping A: $D(A) \subseteq X \to X$ is said to be $\emptyset$- expansive if there exists a function $\emptyset$: $[0; \infty[\to [0; \infty[$ such that for every $x; y \in D(A)$, the inequality $\|Ax - Ay\| \geq \emptyset(\|x - y\|)$ holds with $\emptyset$ satisfying*

1. $\emptyset(0) = 0$.
2. $\emptyset(r) > 0 for r > 0$.
3. *Either it is continuous or it is non- decreasing.*

Definition 2.3. *The mapping T is said to be pseudo- contractive if for every $x, y \in D(T)$ and for all $r > 0$, the inequality $\|xy\| \leq \|(1 + r)(x - y) + r(Ty - Tx)\|$ holds.*

Definition 2.4. *A mapping T: $D(T) \subseteq X \to X$ is said to be non- expansive if the inequality*

$$\|T(x) - T(y)\| \leq \|x - y\|$$

holds for every $x, y \in D(T)$

Definition 2.5. *Let ϕ be a measure of non- compactness on X and let F be a nonempty subset of X. A mapping $T: F \to X$ is said to be a ϕ - k- set contraction if T is continuous and if, for all bounded subsets E of F $\phi T(E) \leq k\phi(E)$.*

Definition 2.6. *Let (M, ρ) be a metric space and let $T : M \to M$ be a mapping. We say that T satisfies a Lipschitz condition with constant $k \geq 0$ if for all $x, y \in M$,*

$$\rho(Tx, Ty) \leq k\rho(x, y)$$

then T is called Lipschitzian mapping and k is called Lipshhitzian constant.

Definition 2.7. *Let X be a Complete Metric Space.Then a map $T : X \to X$is called a contraction mapping on X if there exists $k \in (01)$ such that $d(T(x), T(y)) \leq kd(xy)$ for all $x, y \in X$*

Definition 2.8. *A normed space X is called a Banach space if it is complete, i.e. if every Cauchy sequence is convergent. That is,$\{f_n\}, n \in N$ is Cauchy in $X\exists f \in X$ such that $f_n \to f$*

Theorem 2.9 (Petryshyn). *Let E be a closed, convex subset of a Banach space X such that $0 \in E$. Consider $T : E \to E$ a ϕ - condensing mapping. If there exists $r > 0$ such that $Tx \neq \lambda x$ for any $\lambda > 1$ whenever $x \in E; \|x\| = r$, then T has a fixed point in E.*

Theorem 2.10 (Darbo- Sadovskii). *Suppose M is a nonempty bounded closed and convex subset of a Banach space X and suppose $T : M \to M$ is ϕ - condensing. Then T has a fixed point.*

Theorem 2.11. *Let E be a closed and convex subset of a Banach space X and let $T : E \to E$ be a mapping such that*

1. *T is a $\emptyset$ - 1- set contraction*
2. *There exist $r > 0$ and $x_0 \in E$ such that for all $x \in E \cap S_r[x_0]$ and for all $\lambda > 1$ we have that*

$$T(x) - x_0 \neq \lambda(x-).$$

Then there exists an almost fixed point sequence $\{x_n\}$ of T. Furthermore, if:

3. *$I - T : E \to R(I - T)$ is $\emptyset$ - expansive then T has a unique fixed point $x \in E$ and $x_n \to x$.*

Theorem 2.12. *Let $A : D(A) \to X$ be an m- accretive operator $\emptyset$ - expansive. Then A is surjective.*

Theorem 2.13. *Let E be a nonempty closed and convex subset of a Banach space X and suppose $T : E \to E$ is an Ω- condensing mapping satisfying (A_1). If there exists $x_0 \in E$ and $R > 0$ such that $Tx- \neq \lambda(x-)$ for every $\lambda > 1$ and for every $x \in E \cap S_R[x_0]$, then T has a fixed point.*

Proposition 2.14. *Let X be a Banach space and E a closed subset of X. Let $T : E \to X$ be an injective and continuous mapping such that $T^{-1} : R(T) \to E$ is uniformly continuous. Then $R(T)$ is a closed subset of X.*

Proof. Let $\{x_n\}$ be a sequence in $R(T)$ and this sequence converges to x_0. We have to show that $x_0 \in R(T)$. Since sequence $\{x_n\}$ is a Cauchy sequence and T^{-1}uniformly continuous therefore $\{T^{-1}(x_n)\}$ is also a Cauchy sequence in E but E is closed therefore there exist $y_0 \in E$ such that $T^{-1}(x_n) \to y_0$ as $n \to \infty$. Now

$$\begin{aligned} & T^{-1}(x_n) \to y_0 \text{ as } n \to \infty \\ \Longrightarrow\ & T(T^{-1}(x_n)) \to T(y_o) \text{ as } n \to \infty \ (\because T \text{ is continuous}) \\ \Longrightarrow\ & x_n \to T(y_0) = x_0 \in R(T) \text{ as } n \to \infty \end{aligned}$$

Thus a sequence in $R(T)$ converges to a point of $R(T)$. Hence $R(T)$ is closed sub set of X. □

Lemma 2.15. *Let E be a nonempty bounded closed subset of a Banach space X and let $T : E \to X$ be a $\emptyset$ - expansive mapping. Then T is injective and $T^{-1} : R(T) \to E$ is uniformly continuous.*

Proof. Since T is $\emptyset$ - expansive mapping therefore

$$\|Tx - Ty\| \emptyset(\|x - y\|) \text{ for all } x, y \in E \text{ and } x \neq y$$

thus T is injective. Now we will show that $T^{-1}$is uniformly continuous. For this we will show that for given $\epsilon_0 > 0$ there exist positive integer such that

$$\|x_n - y_n\| < \frac{1}{l}n \implies \|T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m)\| < \epsilon_0 \forall x_n, y_n \in R(T)$$

If possible let

$$\|T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m)\| > \epsilon_0$$

Since T is $\emptyset$ - expansive therefore it is clear that

$$\emptyset\|T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m)\| < \|x_n - y_n\| < \frac{1}{n} \tag{2.1}$$

$$\lim_{n\to\infty} \emptyset\|T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m)\| = 0$$

Now assume that $\emptyset$ is non-decreasing then for $k \geq \epsilon_0$, $0 < \emptyset(k) \leq \emptyset(\epsilon_0)$. Hence we get the contradiction result because on one hand $\exists n_0 \in N$ such that $\frac{1}{n} < \emptyset(\epsilon_0)$ and on the other hand by (2) we have

$$\emptyset(\epsilon_0) \leq \emptyset\|T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m)\| \leq \|x_n - y_n\| < \frac{1}{n}$$

Otherwise $\emptyset$ will be continuous function in this case E is bounded subset therefore $(T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m))$ is bounded therefore we assume that

$$\lim_{n\to\infty} \|T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m)\| = r > \epsilon_0$$

$$\lim_{n\to\infty} \emptyset(\|T^{-1}(x_n) - T^{-1}(x_m)\|) = \emptyset(r) > 0$$

Which contradicts (2) hence $T^{-1}$is uniformly continuous. □

Corollary 2.16. *Let E be a closed bounded subset of a Banach space X and let $T : E \to X$ be a continuous $\emptyset$-expansive mapping. If there exists $\{x_n\}$ in $R(T)$ such that $\{x_n\}$ converges to zero, then $0 \in R(T)$.*

Lemma 2.17. *Let E be a closed subset of a Banach space X and let $T : E \to X$ be a continuous mapping. If there exists an almost fixed point sequence $\{x_n\}$ of T in E and if the inverse mapping $(I - T)^{-1} : R(I - T) \to E$ exists and it is uniformly continuous, then T has a unique fixed point $x_0 \in E$. Furthermore, $x_n \to x_0$ as $n \to \infty$.*

Proof. Since inverse of $(I - T)$ exist therefore it is injective consequently $(I - T)^{-1}$ is also injective and continuous therefore by proposition 3.1 $R(I - T)$ is closed which implies $T(x_n) \to x_n$ as $n \to \infty$ because $\{x_n\}$ is an almost fixed point sequence of T thus we obtained that $0 \in R(I - T)$. Now

$$\begin{aligned} & 0 \in R(I - T) \\ \implies & \exists x_0 \in E \text{such that} (I - T)x_0 = 0 \\ \implies & I(x_0) = T(x_0) \\ \implies & T(x_0) = x_0 \\ \implies & x_0 \text{is fixed point of } T \end{aligned}$$

If possible let y_0 be another fixed point of T then $T(y_0) = y_0$ Since $(I - T)$ is injective therefore

$$\begin{aligned} & (I - T)x_0 = (I - T)y_0 \\ \implies & x_0 = y_0 \\ \implies & x_0 \text{is unique fixed point of } T \end{aligned}$$

□

Lemma 2.18. *Assume (α_n) is a sequence in $[0;\infty)$ such that*

$$\alpha_{n+1} \leq (1-\gamma_n)\alpha_n + \delta_n for n \geq 0$$

where (γ_n) is a sequence in $(0;1)$ and (δ_n) is a sequence in R such that

1. $\sum_{n=1}^{\infty} \gamma_n = \infty$
2. $\limsup_{n\to\infty} \frac{\delta_n}{\gamma_n} \leq 0$ *or* $\sum_{n=1}^{\infty} |\delta| < \infty$. *Then* $\lim_{n\to\infty} \alpha_n = 0$

Corollary 2.19. *Let E be a closed bounded subset of a Banach space X and let $T : E \to E$ be a continuous mapping such that $I - T : E \to X$ is $\emptyset$-expansive. If there exists an almost fixed point (a.f.p. in short) sequence $\{x_n\}$ of T in E, then T has a unique fixed point $x_0 \in E$. Furthermore, $x_n \to x_0$ as $n \to \infty$.*

Proof. Since $I - T : E \to X$ is $\emptyset$-expansive and continuous then by lemma 3.1 $(I-T)^{-1} : R(I-T) \to E$ is uniformly continuous thus applying lemma 3.2 we can get the required result. □

3. Main Results

Theorem 3.1. *Let E be a closed and convex subset of a Banach space X and let $T : E \to E$ be a mapping such that:*

1. *T satisfies (A_1).*
2. *T is an ω- 1-set contraction.*
3. *There exist $r > 0$ and $x_0 \in E$ such that for all $x \in E \cap S_r[x_0]$ and for all $\lambda > 1$ we have that $T(x) - x_0 \neq \lambda(x-$ Then there exists an almost fixed point sequence (x_n) of T. Furthermore, if:*
4. *$(I - T) : E \to X$ is $\emptyset$-expansive, then T has a unique fixed point $x \in E$ and $x_n \to x$.*

Proof. We define $B_r^C[x_0] = \{x \in E : \|x - x_0\| \leq r\}$ and $\rho : E \to B_r^C[x_0]$ be a mapping given by

$$\rho(x) = \begin{cases} x & , if \ \|x - x_0\| \leq r \\ \frac{r}{\|x-x_0\|}x + (1 - \frac{r}{\|x-x_0\|}x_0) & , if \ \|x - x_0\| > r \end{cases}$$

$B_r^C[x_0]$ is a nonempty bounded closed and convex subset of E and the mapping ρ is a continuous retracti of E on $B_r^C[x_0]$.
For each integer $n \geq 2$ we define the mapping $T_n : E \to E$ given by

$$T_n(x) = \frac{1}{n}x_0 + (1 - \frac{1}{n})T(x)$$

It is clear that T_n is an $w - (1 - \frac{1}{n})$-set contraction satisfying condition (A_1), for any $n \geq 2$.

Now we define the mapping $T_{n,\rho} : B_r^C[x_0] \to B_r^C[x_0]$ such that $T_{n,\rho}(x) = \rho(x))$ then this mapping continuous and satisfies the condition (A_1)

By theorem 2.3 $T_{n,\rho}$ has a fixed point x_n (say) therefore $T_{n,\rho}(x_n) = x_n$ We will show that $T(x_n) = x_n$ for t we have to show that $\|T(x_n) - x_0\| \leq 0$ If possible let $\|T(x_n) - x_0\| > r$ Now

$$\begin{aligned} x_n &= T_{n,\rho}(x_n) \\ &= \rho(x_n)) \\ &= \frac{r}{\|T_n(x_n) - x_0\|}T_n(x_n) + (1 - \frac{r}{\|T_n(x_n) - x_0\|})x_0 \end{aligned}$$

Which implies

$$\begin{aligned} &\frac{r}{\|T_n(x_n) - x_0\|}(T_n(x_n) - x_0) = x_n - x_0 \\ \implies &x_n \in E \cap S_R[x_0] \end{aligned}$$

We also have

$$T(x_n) - x_0 = \frac{n}{n-1}(T_n(x_n) - x_0)$$
$$= \lambda(x_n - x_0) \text{ where } \lambda = \frac{n}{n-1}\frac{\|T_n(x_n) - x_0\|}{r} > 1$$

Which contradicts the condition (ii) hence $\|T(x_n) - x_0\| \leq r$ and therefore

$$x_n = \rho(x_n)) = T_n(x_n)$$

Now we shall that $\{x_n\}$ is an almost sequence in T and

$$\|x_0 - T(x_n)\| \leq \|x_0 - T_n(x_n)\| + \|T_n(x_n) - T(x_n)\|$$
$$\leq r + \frac{1}{n}\|x_0 - T(X_n)\|$$

Which implies

$$\|x_0 - T(x_n)\| \leq \frac{n}{n-1}r, \text{therefore by the following inequality}$$
$$\|x_n - T(x_n)\| = \frac{1}{n}\|x_0 - T(x_n)\|$$
$$\leq \frac{r}{n-1}$$

Thus we obtained bounded fixed point sequence $\{x_n\}$ for T. Finally if T satisfies (iii) then T has a unique fixed point and $x_n \to x$ □

Theorem 3.2. *Let E be a closed and convex subset of a Banach space X and let $T : E \to E$ be a nonexpansive mapping such that:*

1. *$I - T : E \to R(I - T)$ is $\emptyset$-expansive,*
2. *There exist $r > 0$ and $x_0 \in E$ such that for all $x \in E \cap S_r[x_0]$ and for all $\lambda > 1$ we have that $T(x) - x_0 \neq \lambda(x-)$.*

Assume $\{\alpha_n\}$ is a sequence in $(0;1)$ satisfying:

1. $\sum_{n=1}^{\infty} = \infty$
2. $\lim_{n\to\infty} \alpha_n = 0$
3. $\sum_{n=1}^{\infty} |\alpha_n - \alpha_n - 1| < \infty$.

Let $x_1 \in E$ and define $x_{n+1} = \alpha_n x_1 + (1 - \alpha_n)T(x_n)$ for each positive integer n. Then sequence $\{x_n\}$ converges to unique fixed point of T.

Proof. We known that if T is nonexpansive, then it is 1-set contractive for the Kuratowskii measure of noncompactness and thus, T satisfies the assumptions of Theorem 2.5 which implies that there exists a unique fixed point $p \in E$ for T. We claim that $\{x_n\}$ is a bounded sequence in E. Now

$$\|x_n - p\| = \|\alpha_n(x_1 - p) + (1 - \alpha_n)(Tx_{n-1} - p)\|$$
$$\leq \alpha_n\|x_1 - p\| + (1 - \alpha_n)\|x_{n-1} - p\|$$
$$\leq \max\{\|x_1 - p\|, \|x_{n-1} - p\|\}$$

By induction we infer that $\|x_n - p\| \leq \|x_1 - p\|$ for every $n \in N$. This means that $\{x_n\}$ is bounded as we claimed. On the other hand, by definition of $\{x_n\}$ we obtain that $\{Tx_n\}$ is also a bounded sequence. Let M be an upper bounded of the sequence $(\|x_1 - Tx_n\|)$. Then

$$\begin{aligned}\|x_{n+1} - x_n\| &= \|\alpha_n x_1 + (1-\alpha_n)Tx_n - (\alpha_{n-1}x_1 + (1-\alpha_{n-1})TX_{n-1}))\| \\ &= \|(\alpha_n - \alpha_{n-1})x_1 + (1-\alpha_n)(Tx_n - Tx_{n-1}) + (\alpha_{n-1} - \alpha_n)Tx_{n-1}\| \\ &= \|(\alpha_n - \alpha_{n-1})(x_1 - Tx_{n-1}) + (1-\alpha_n)(Tx_n - Tx_{n-1})\| \\ &\leq M\|\alpha_n - \alpha_{n-1}\| + (1-\alpha_n)\|x_n - x_{n-1}\|\end{aligned}$$

By Lemma 3.3 we have that $\|x_{n+1} - x_n\| \to 0$ as $n \to \infty$. Finally, since $x_{n+1} + T(x_n) = \alpha_n(x_1 - Tx_n) \to 0$ as $n \to \infty$ and by the following inequality

$$\|x_n - Tx_n\| \|x_n - x_{n+1}\| + \|x_{n+1} - Tx_n\|$$

Thus we obtained that sequence $\{x_n\}$ is bounded almost fixed point sequence and according to theorem 2.5 sequence $\{x_n\}$ converges to the unique fixed point of T. □

4. Conclusion

Finding fixed points of nonlinear mappings especially, non- expansive mappings has received vast investigations due to its extensive applications in a variety of applied areas of inverse problem, partial differential equations, image recovery and signal processing. It is well known that1- set contraction and pseudo- contractive mappings have more powerful applications than non- expansive mappings in solving different problems. In this paper, we devote to construct the methods for computing the fixed points of 1-set contraction and pseudo- contractive mappings.

References

[1] B. Halpern, "Fixed points of nonexpanding maps," Bulletin of the American Mathematical Society, vol.73, pp. 957- 961.

[2] W.A. Kirk, P.S. Srinivasan and P. Veeramani, "Fixed points for mappings satisfying cyclical contractive conditions", Fixed Point Theory, Vol. 4, No. 1, pp. 79- 89,

[3] Y. Liu, Z. Li, Schaefer type theorem and periodic solutions of evolution equations, J. Math. Anal, 237- 255.

[4] M.A. Krasnoselskii, Some problems of nonlinear analysis, Am. Math. Soc. Transl. 10(2) 345 - 409.

[5] B. N. Sadovskii, On a fixed point principle,Funkt, Anal 4(2) 74 - 76.

[6] J. Appel, Erazakova, S. Folcon, Santana, M. Vath On some Banach space contains arising in nonlinear fixed point and eigenvalue theory, Fixed point theory. 317 - 336

[7] R. Wittmann, "Approximation of fixed points of nonexpansive mappings," Archiv Der Mathematik, vol.58, no. 5, pp. 486- 491.

[8] A. T. M. Lau and W. Takahashi, "Fixed point properties for semigroup of Nonexpansive mappings on Frechet spaces,' Nonlinear Analysis, vol. 70, no.11, pp. 3837- 3841.

[9] R. D. Nussbaum Degree theory of local condensing maps, J. Math. Soc. Jap.508 - 520

[10] D.R. Sahu, H.K. Xu and J.C. Yao, "Asymptotically strict pseudocontractive mappings in the intermediate sense", Nonlinear Analysis, Theory , Methods and Applications, Vol. 70, pp.3502- 3511.

[11] G. Darbo, Punti uniti in transformazioni a codomio non compatto, Rend. Sem. Mat. Uni. Padova 24, 84- 92

[12] K. Goebel, W.A. Kirk, Topics in Metric Fixed Point Theory, Cambridge University Press .

[13] W.A. Kirk, B. Sims (Eds.), Handbook of Metric Fixed Point Theory, Kluwer Academic Publishers.

[14] M.A. Krasnoselskii, Some problems of nonlinear analysis, Am. Math. Soc. Transl. 10 (2), 345- 409.

The book Role of Applied Sciences in Social Implications Volume D: Mathematics & Computer Science is a compilation of research papers contributed in the International Conference IC-RASSI-2023 organized by Govt. Digvijay Autonomous Postgraduate College Rajnandgaon (C.G.) India from 6 to 8th February 2023.

HEMANT KUMAR SAW
Asst. Professor of Mathematics, Govt. Digvijay Autonomous Postgraduate College Rajnandgaon (Chhattisgarh) INDIA

KAVITA SAKURE
Asst. Professor of Mathematics, Govt. Digvijay Autonomous Postgraduate College Rajnandgaon (Chhattisgarh) INDIA

SURESH KUMAR PATEL
Asst. Professor of Physics, Govt. Digvijay Autonomous Postgraduate College Rajnandgaon (Chhattisgarh) INDIA

PRAMOD KUMAR MAHISH
Asst. Professor of Biotechnology, Govt. Digvijay Autonomous Postgraduate College Rajnandgaon (Chhattisgarh) INDIA

DAKESHWAR KUMAR VERMA
Asst. Professor of Chemistry, Govt. Digvijay Autonomous Postgraduate College Rajnandgaon (Chhattisgarh) INDIA

RAJU KHUTTEY
Asst. Professor of Computer science, Govt. Digvijay Autonomous Postgraduate College Rajnandgaon (Chhattisgarh) INDIA

PROBECELL

₹620/-

ISBN 78-81-959977-0-1

PROBECELL PRESS

Office- Chauhan Town, Bhilai, Chhattisgarh- 490020

Email- probecellinfo@gmail.com, Ph-74152-11131

Website- www.probecellpress.com

OTHER SERVICES

Probecell: Scientific Writing Services
ISO Certified 9001:2015, Website- www.probecell.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 8.012(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | September 2022 Issue-93, Vol-01 | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

September 2022, Issue-93, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 8.012(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | September 2022 Issue-93, Vol-01 | 08

26) फैंटेसी के कवि गजानन माधव ''मुक्तिबोध'' एवं उनकी कविता ''अंधेरे में''
मनीष कुमार कुर्रे, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ ||107

27) प्रवाद पर्व में मिथक और नए संदर्भ का अध्ययन
नटराज गुप्ता, नक्सलबाड़ी ||115

28) नदी संरक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व
डॉ. सुषमा नयाल, हरिद्वार ||120

29) भारत में सांप्रदायिकता और 'पहल' की भूमिका
कुमार प्रह्लाद, Burari ||123

30) छत्तीसगढ़ राज्य में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत संचालित उचित मूल्य ...
डॉ. रमेश कुमार मिश्रा, सारंगढ़ (छत्तीसगढ़) ||127

31) मंजुल भगत् के 'अधार' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श
प्रा. विद्या बाबूराव खाडे, जि. बीड, महाराष्ट्र ||129

32) भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा एवं दिशा—एक एतिहासिक सिंहावलोकन
श्रीमती प्रियांकी गजभिये, जिला — राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ ||131

33) सर्पगन्धा की खेती एवं आजीविका सृजन
मधुरानी & डॉ. रीता जायसवाल, भोपाल, म.प्र. भारत ||136

34) आधुनिक हिन्दी समीक्षा के स्वच्छन्दतावादी समीक्षक डॉ० कुमार विमल
Dr.Arvinder Singh Arora, Hoshiarpur ||141

35) विलुप्त होते प्राकृतिक संसाधन,पर्यावरण संकट एवं राजस्थानी संस्कृति में समाधान
डॉ. शोभना जैन, भोपाल ||144

36) विश्व—मानव और मुक्तिबोध की विश्वदृष्टि:
प्रा.डॉ. रमेश विठोबा कांबळे, ता.जि.उस्मानाबाद ||147

37) उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन — मैदुनी गांव का वैयक्तिक अध्ययन
डॉ. संगीता भट्ट, देहरादून ||150

38) राष्ट्र सेविका समिति का विकास एवं महिला सशक्तिकरण
विक्रम सिंह माहोड़ी, हल्द्वानी ||153

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

मंजुल भगत ने मानों मध्यवर्गीय महिलाओं की मानसिकता हो उजागर किया है ।इस घरो मे काम करने वाली अनारो उनका चित्र उपस्थित कराती है । टीचर मालकीन समजदार नारी है । वह कहती है — क्या करे भाई, एक अनार और सौ बीमार । तू एक साथ सबके घरो मे नही हो सकती। बस इतना कर लिया कर की बारी — बारी से सबके घरों में नौ बजे पहुँच जाया कर। अपना रूट रोज बदलाकर अनारो तब जाकर बात बनेगी।८ यह औरतें जूठन साफ करने वाली अनारो पर निर्भर लगती है। सबको लगता है कि अनारो पहले मेरे घर पहुँच जाएँ ।

डॉ. नीलिमा सिंह ने अनारो उपन्यास के बारे मे लिखा है कि, इस उपन्यास मे उत्तरदायित्वहीन पुरुष की पत्नी की चिंतन पीडा व्यक्त हुई है । क्योंकि नारी मन का ऐसा यथार्थ चित्रण केवल एक स्त्री ही कर सकती है ।९ पुरुष जिम्मेदारीयो से दूर भागता हुआ दिखाई देता है । नारी को केवल उपभोग की वस्तू समझता है । अनारो नंदलाल की कथा इस बात का सबूत है । ऐसे भी लोग इस दुनिया मे है ।जो पशु से भी बत्तर है ।

निष्कर्षत: कह सकते है की मंजुल भगत ने अपने उपन्यास अनारो मे स्त्री जीवन की त्रासदी के माध्यम से नारी जीवन की यथार्थता को बडी गंभीरता और संशलिष्टता के साथ उजागर किया है । जिसमें नारी जीवन की मुक्ती कामना साफ साफ दृष्टिगत होती है।

संदर्भ :

१ सं. कमलकिशोर कमलकिशोर, मंजुल भगत् का समग्र कथासाहित्य, किताबघर प्रकाशन २०१३ पृ. सं ०७

२. संपा. कमलकिशोर गोयनका — मंजुल भगत् का समग्र कथासाहित्य पृ.६८

३ संपा. कमलकिशोर गोयनका— मंजुल भगत् का समग्र कथासाहित्य पृ. ६८

४. संपा. कमलकिशोर गोयनका — मंजुल भगत् का समग्र कथासाहित्य पृ ६६

५. वही पृ. ६६

६. वही पृ. ७३

७. वही पृ . ७५

८. वही पृ. १५०

९ वही पृ. १६०

32

भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा एवं दिशा—एक एतिहासिक सिंहावलोकन

श्रीमती प्रियांकी गजभिये
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
शासकीय डॉ. बाबा साहेब भीमराव आम्बेंडकर
स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोंगरगांव,
जिला — राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

विश्व में लिंगानुपात की दृष्टि से स्त्री और पुरूषों की जनसंख्या लगभग समान है, किंतु उसके बावजूद समूचे विश्व के इतिहास में पुरूषों का ही वर्चस्व दिखाई पड़ता है । वर्तमान में भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में जो नारी सशक्तिकरण दिखाई पड़ता है, इसका इतिहास भी बहुत पुराना नही है। भारतीय नारी अपने अधिकारों के लिये चहारदिवारी के भीतर हमेशा उद्वेलित होती रही किंतु वर्ग—संगठन के अभाव में महिलाओं के अधिकारों के लिये महिलाओं के द्वारा किया गया कोई आंदोलन भारतीय इतिहास में ढुढ़ पाना दुलर्भ है । यद्यपि रूढ़ियों के वश में महिलाएं संगठित होकर जौहर और सती तक हो जाने को तैयार थी परन्तु अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए वे कभी संगठित नही हो पायी। प्राचीन भारत में जिन विदुषी महिलाओं के उद्धरण प्राप्त होते है वे भी अपवाद स्वरूप ही है, अन्यथा महिला संरक्षण और सुधारों के लिये किये गये आंदोलनों की झलक एक अनवरत् श्रृखंला के रूप में इतिहास में दर्ज मिलती, किंतु ऐसा नहीं है । प्राचीन भारत के कालक्रम के पश्चात् महिलाओं की स्थिति एक भयंकर अधंकारमय मध्ययुग के रूप में इतिहास में कहीं गुम हो जाती है, जो फिर कहीं भारत के नवजागरण काल के पश्चात् आधुनिक भारत के इतिहास के रूप में यदा—कदा प्रतिबिंबित् होती है। इतिहास के विद्यार्थी के लिये

महिलाओं की दशा और दिशा को लेकर सदैव असमंजस की स्थिति बनी रहती है, कि भारत में नारी सुधार का आंदोलन वास्तव में संपूर्ण भारतीय महिलाओं की सुधार का आंदोलन है या भारत के कुछ उच्च वर्गीय महिलाओं के सुधार का आंदोलन मात्र है।

भारतीय समाज अपने आरंभ एवं ग्रामीण विविध रूपों में रहा है । यही कारण है कि आदिवासी समाज में महिलाओं की जो स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता दिखाई पड़ती है। ऐसा सामान्य वर्गो में दिखाई नहीं पड़ता है। इस आलेख में लेखक द्वारा महिलाओं की दशा और दिशा को लेकर विभिन्न कालों के इतिहास के कालक्रमों के संदर्भ में एक विस्तृत पड़ताल की गई है।

भारत में सभ्यता का आरंभ सिंधु घाटी की सभ्यता से होता है, जहां सामाजिक स्वरूप मातृ सत्तात्मक होने के प्रमाण मिलते है। इस काल में खुदाई के दौरान प्राप्त बहुसंख्यक नारी मुर्तियों, मूहरों में स्त्री आकृतियाँ, हड़प्पा से प्राप्त एक मोहर में स्त्री के गर्भ से एक वृक्ष निकलना इस काल में महिलाओं की सम्मान जनक स्थिति बताता है। स्त्री को मातृदेवी के रूप में पूजा जाता था संभवत: स्त्री की प्राकृतिक प्रजनन शक्ति की उपासना की जाती थी।

ऋग्वैदिक काल आर्यो के आगमन का काल था तथा आर्यो का सामाजिक स्वरूप यद्यपि पितृसत्तात्मक था तथापि महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी। महिलाओं को सामाजिक एवं धार्मिक अधिकार तो प्राप्त थे किन्तु राजनैतिक तथा आर्थिक अधिकार उन्हें प्राप्त नहीं थे । शतपथ ब्राम्हण में पत्नी को पति की अर्धांगिनी कहा गया है। ऋग्वेद में जायेदस्यम् अर्थात पत्नी ही गृह है, कहकर उसके महत्व को स्पष्टत: स्वीकार किया गया है। याज्ञिक कार्यों के संपादन हेतु पति–पत्नी दोनों की उपस्थिति आवश्यक थी। उनकी शिक्षा–दीक्षा की समुचित व्यवस्था थी, ऋग्वेद में घोषा, अपाला, लोपामूद्रा, विश्वारा आदि विदुषी स्त्रियों के नाम मिलते हैं। उल्लेखित महिलाऐं पर्याप्त शिक्षित थी तथा जिन्होंने वैदिक मंत्रो की रचना भी की थी ।

उत्तर वैदिक काल में भी महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक बनी हुई थी। समाज में विवाह का महत्व स्थापित था तथा अविवाहित पुरूष को यज्ञ का अधिकार नहीं था । बिना स्त्री के पुरूष को मोक्ष प्राप्त नही हो सकता था । जाबालोपनिषद में आश्रम व्यवस्था का वर्णन मिलता है जिसके अनुसार पुरूष को क्रमश: ब्रम्हचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम को मोक्ष प्राप्ति के लिए अपने संपूर्ण जीवन में अपनाना होता था। तात्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, और धार्मिक परिवर्तन ने स्त्री के अधिकारों में न्यूनता लाना आरंभ कर दिया । पशुपालन एवं खाद्य संग्रहण से कृषिमूलक अर्थव्यवस्था, कबिलाई संस्कृति से ग्रामीण जनपदों का उदय, स्त्री को उपनयन संस्कार से वंचित करना, अतिरेक उत्पादन से व्यापार–व्यवसाय की वृद्धि ने परिवार में स्त्री की भूमिका में बदलाव लाया तथा स्त्री की स्थिति में गिरावट लाने का सतत् कार्य किया । कृषि में अधिक शारीरिक श्रम की आवश्यकता और स्थायी निवास ने महिलाओं को परिवार के वृद्धों एवं बच्चों की सुरक्षा हेतु घरों तक सीमित रखने के अधिकार युक्त कारण मिल गये। अब उपनयन संस्कार के बिना स्त्री परिवार के धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करने, वैदिक मंत्रो के उच्चारण आदि महत्वपूर्ण सामाजिक स्थिति से वंचित कर दी गई । तात्काालीक धार्मिक ग्रंथो में स्त्री के सामाजिक–धार्मिक अधिकारों में गिरावट स्पष्ट देखी जा सकती है। एतरेय ब्राम्हण कन्या को चिन्ता का कारण बताते हुए कृपण मानता है। अथर्ववेद भी कन्याओं के जन्म की निंदा करता है। मैत्रायणी संहिता में तो स्त्री को धुत तथा मदिरा के श्रेणी में रखा गया है। स्त्री के सामाजिक समारोह, राजनैनिक सभाओं तथा समितियों में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

सूत्रकाल एवं महाकाव्यकाल में पर्दा प्रथा, सतीप्रथा, बहुपत्नी प्रथा, बाल विवाह आदि के आरंभिक प्रमाण मिलने लगे थे। दुर्योधन की पत्नियों को महाभारत के शाक्य पर्व में असूर्यम्पश्या अर्थात जिसे सूर्य भी ना देख सके ऐसा कहा गया है। महाभारत में माद्री अपने पति पाण्डु के साथ सती हो गई थी । महाभारत के अनुशासन पर्व में भीष्म ने ३० वर्ष के पुरूष हेतु १० वर्ष की कन्या को विवाह हेतु उपयुक्त बताया है।

रामायण में सीता को पुरूष की अनुगामिनी एवं आज्ञाकारिणी पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आज तक भारतीय नारी के समक्ष सीता को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वशिष्ठ के वक्तव्य के अनुसार स्त्री स्वतंत्रता के योग्य नही है, वह बचपन में पिता, युवावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में अपने पुत्र के संरक्षण में रहती है। रामायण में कौशिल्या,तारा को मंत्रविदा तथा महाभारत में द्रौपदी को पंडिता कहा गया है, किन्तु सामान्य स्त्रियों की दशा वैदिककाल की अपेक्षा हीन हो चुकी थी तथा शिक्षा प्राप्त करने के सारे दरवाजे उनके लिए लगभग बंद हो चुके थे ।

६ वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हिंदु धर्म की जटिलता के कारण अनेक नवीन संप्रदायों का उदय होता है, जिनमें बुद्ध धर्म सार्वाधिक प्रचलित धर्म रहा था। किन्तु स्वयं महात्मा गौतम बुद्ध भी स्त्री को अपने संघ में प्रवेश की आज्ञा नही देते है । इस काल की निरंतरता के साथ ही अनेक कुप्रथाओं और कुरितियों के साथ इस काल में गणिकाओं का चलन भी द्रुतगति से हुआ । राज्य में गणिकाओं का गणिकाभिषेक किया जाता था । आम्रपाली ऐसी ही एक गणिका थी । इस तरह पूर्व से ही स्त्री को जकड़ी हुई अनेक कुप्रथाओं के बीच वेश्यावृत्ति का नाम भी जुड़ गया जिसने स्त्री को भोग–विलास का पात्र बनाकर रख दिया ।

मौर्यकाल में स्त्रियों को कुछ सामाजिक अधिकार प्राप्त थे ऐसा प्रतीत होता है जिनमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र में स्त्री को विधवा पुर्नविवाह, पति से संबंध विच्छेद अर्थात तलाक का अधिकार और दुराचारी पति के विरूद्ध न्यायालय में शरण लेने के अधिकार विशेष रूप से उल्लेखनीय है। महिलाओं को स्त्री धन के अधिकार, महिला गुप्तचर का कार्य, अंग रक्षिकाओं के कार्यो जैसा आधुनिक स्वरूप भी उस काल में दखाई पड़ता है। समाज के कुछ वर्ग की महिलाओं को सैनिक शिक्षा प्राप्त करने का भी अधिकार था । अर्थशास्त्र में चंद्रगुप्त मौर्य की अंग रक्षिकाओं का उल्लेख मिलता है। चन्द्रगुप्त मौर्य के समकालीन यूनानी दार्शनिक मैगस्थनीज लिखता है, कि कुछ स्त्रियां रथों में, कुछ अश्वों पर तथा कुछ हाथियों पर चढ़ती थी । संभवत: वे विदेशी महिलाएं रही होगीं जो मौर्यकाल के आगमन के से पूर्व ही भारत में ईरानी, यूनानी आक्रमणों के कारण, यहां रच–बस गयी थी । इस काल में प्राय: महिलाएं घरों में ही रहती थी । महिलाओं को कुछ सामाजिक एवं कानूनी अधिकार प्राप्त हो गये थे । कौटिल्य ने उन्हे श्अनिश्कासिनीश कहा है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में स्त्रियों के लिए नियमावली भी मिलती है।

मौर्योत्तर काल में सातवाहन वंश विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस काल में मातृसत्तात्मक परिवार थे। सातवाहन शासकों ने अपने नाम के साथ माता के नाम की उपाधि धारण किया। गौतमिपुत्र शातकर्णि, वसिष्ठीपुत्र पुलुमावी, यज्ञश्री शातकर्णि, शिवश्री शातकर्णि आदि राजाओं के नाम का मातृसूचक होना समाज में स्त्रियों की सम्मान जनक स्थिति का आभास कराता है। इस काल के अभिलेखों में भी स्त्रियों के संपत्ति संबंधी अधिकारों, सभाओं में भाग लेते हुए, अतिथि सत्कार करते हुए बताया गया है जो स्त्रियों के सार्वजनिक जीवन को स्पष्ट करता है। इस काल में स्त्रियां पर्याप्त शिक्षित एवं पर्दा प्रथा से मुक्त थी ।

गुप्तकाल एवं हर्षकालीन महिलाओं की दशा पर भारतीय ग्रंथकारों, चीनी यात्री फाह्यान एवं व्हेनसांग ने पर्याप्त विवरण उपलब्ध कराया है। जिनमें उच्च एवं निम्न वर्गीय महिलाओं की जीवन दशा में पर्याप्त अंतर देखा जा सकता है। गुप्त शासक चंद्रगुप्त द्वितीय की विधवा पुत्री प्रभावती एवं हर्षवर्धन की विधवा बहन राजश्री ने क्रमश: वाकाटक वंश एवं मौखरी वंश में शासन संचालन का नेतृत्व किया तथा विधवा होते हुए भी राजसी जीवन यापन करती थी जबकि वहीं आम विधवा महिलाओं का जीवन नारकीय था। बृहस्पति की स्मृतियों में विधवा के लिये आजीवन ब्रम्हचर्य का पालन, व्रत, उपवास, तप, दान आदि में लीन रहकर कष्टप्रद जीवन व्यतीत करने का उल्लेख मिलता है। उच्चकुल की महिलाओं में पर्दा प्रथा प्रचलित थी जबकि आम जीवन में महिलाऐं पर्दा नही करती थी। भानुगुप्त के ५१० ई. के एरण अभिलेख से सती प्रथा की प्रथम अभिलेखीय जानकारी मिलती है । यद्यपि यह प्रथा केवल उच्च वर्गो तक ही सीमित थी। इस

काल में देवदासी प्रथा का भी उल्लेख मिलता है। कालिदास ने उज्जयिनी के महाकाल मंदिर में देवदासियों के नृत्यगान का विवरण दिया है। वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य में रामगढ़ की पहाड़ियों के एक गुफा लेख में सुतनका नाम देवदासी का उल्लेख है। स्त्रियों के संपत्ति संबंधी अधिकारों के विषय में याज्ञवलक्य स्मृति में पुत्र के अभाव में पति की संपत्ति पर पत्नी का अधिकार बताया है । कात्यायन तथा नारद स्मृति में कन्या को पिता की संपत्ति की अधिकारिणी मानते है। कात्यायन ने तो अचल संपत्ति में भी स्त्री के अधिकारों का समर्थन किया है। इस तरह से स्त्रियों के अधिकारों एवं जीवन शैली में उच्च वर्गो एवं निम्न वर्गो में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है, जो कि गुप्तोत्तर एवं राजपूत काल में भी निरंतर बना रहा । यद्यपि कुछ प्रभावशाली स्त्रियों ने भी इस काल में कुशल शासन संचालन किया जिनमें कश्मीर की सुगन्धा दिद्दा, चालुक्य वंशी विजय भट्टारिका इत्यादि सम्मिलित है।

मध्यकालीन इतिहास सामान्यत: उत्तर भारत में मुस्लिम वर्चस्व से ब्रिटिश भारत की शुरूआत के बीच का इतिहास है। इस दौरान मुस्लिम शासकों के काल में मुस्लिम समाज एवं हिंदु समाज दोनों मे ही स्त्रियां उपेक्षित थीं। विशेषकर हिंदू स्त्रियां हिंदू सामाजिक परंपराओं के साथ ही मुस्लिम समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे तलाक प्रथा, बहुविवाह प्रथा, पर्दाप्रथा को स्वीकार करने हेतु मजबूर कर दी गयीं। मुस्लिम समाज की स्त्रियों में शिक्षा का अभाव था । जो केवल कुरान के अध्ययन तक ही सीमित था । रजिया सुल्तान, गुलबदन बेगम, नूरजहां जैसी शाही परिवार की स्त्रियों को ही शिक्षा का अधिकार था । तलाक प्रथा एवं बहुविवाह प्रथा को मुस्लिम समाज में कानूनी संरक्षण प्राप्त था । फुतुहाते फिरोजशाही में फिरोजशाह तुगलक ने अपनी प्रजा के लिए पर्दाप्रथा का आदेश दिया था । फिरोजशाह तुगलक ने मुस्लिम कन्याओं के विवाह हेतु आर्थिक अनुदान प्रदान करने महकमा खैरात खोला था। मुस्लिम महिलाओं को पिता की संपत्ति में अधिकार प्राप्त था जो कि इस्लामी कानून द्वारा अधिकृत था । हिंदू स्त्रियों की स्थिति अत्यधिक दयनीय थी क्योंकि मुस्लिम शासकों एवं उच्च वर्गीय पुरूषों से महिलाओं की रक्षा हेतु अब बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दाप्रथा, बहुविवाह जैसी कुरितियां उच्च वर्ग से निम्न हिंदू वर्ग में भी प्रचलित हो गयी थी । राजपूत समाज में जौहर प्रथा का प्रचलन बढ़ गया। मलिक मुहम्मद जायसी की पद्मावत में रानी पद्मावती के जौहर का सजीव दुखद वर्णन मिलता है। डॉ. अशरफ के अनुसार हरम शब्द का प्रयोग मध्यकाल से ही मिलना आरंभ होता है। हरम शाही राज महलों में एक अलग भवन या भवन का पृथक भाग होता था जहां स्त्री दासियां, हिजड़े, अन्य पराजित हिंदू राजाओं के परिवार की स्त्रियां तथा जन सामान्य से बलातपूर्वक उठायी गई स्त्रियों को भोग विलास हेतु रखा जाता था। इस्लाम में प्रचलित बहुविवाह का प्रसार हिंदू सामंतो एवं उच्च कुलों में भी होने लगा था। मुस्लिम शासकों एवं हरम से बालिकाओं की रक्षा हेतु सात से तेरह वर्ष के भीतर ही बाल विवाह होने लगे जिससे हिंदू समाज में विधवाओं की संख्या बढ़ने लगी । हिंदू समाज में राजनीतिक संबंधों की प्रगाढ़ता हेतु डोला भेजने की प्रथा आरंभ हो गई अर्थात निर्बल व्यक्ति अपने से प्रबल व्यक्ति के हरम में खुबसूरत स्त्रियों का डोला भेजकर राजनीतिक यातना से मुक्ति प्राप्त करता था । अकबर के काल में यह परंपरा जोर पकड़ने लगी थी । इस तरह से हिंदू एवं मुस्लिम दोनों ही समाजों की स्त्रियों की दशा एवं दिशा निरंतर गिरती चली गयी । जिसका प्रभाव मध्यकालीन साहित्य में भी परिलक्षित होता है। १६ वीं शताब्दी में महाकवि तुलसीदास ने नारी की स्थिति का वर्णन इन शब्दों में किया है :—

ढोर गंवार शुद्र अरू नारी ।
यह सब ताड़न के अधिकारी।।

तुलसीदास से पूर्व कबीर नें भी नारी का वर्णन करते हुए लिखा है :—

एक कनक एक कामिनी
दुर्गम घाटी दोय ।

डॉ. अशरफ लिखते है एक बार स्त्री का व्यक्तित्व दबा देने पर स्त्री—पुरूष के बीच असहमति का अंदेशा नही रह जाता है। इस तरह से जन्म से ही उसे अबला होने का बोध कराया जाता था । पर्दाप्रथा

ने इसके आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक अस्तित्व को समाप्त प्राय: कर दिया।

ब्रिटिश काल के आरंभ में महिलाओं की स्थिति यथावत बनी हुई थी चुंकि अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य भारत में राजनीतिक सत्ता स्थापित करना था न कि सुधार करना । पाश्चात्य् शिक्षा का आरंभ १८१३ के अधिनियम के पश्चात् होने लगता है परिणामत: प्रबुद्ध भारतीयों का एक वर्ग पाश्चात्य् विचारधारा के संपर्क में आकर भारत में १९ वीं शताब्दी में सामाजिक रूढ़ियों कुप्रथाओं पर प्रहार करने लगता है । इस प्रबुद्ध वर्ग में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर, एम.जी.रानाडे, मालाबारी, डी. के. कर्वे, ज्योतिबा राव फुले, दयानंद सरस्वती, सर सैय्यद अहमद खां आदि प्रमुख व्यक्तित्व हैं। इन समाज सुधारकों द्वारा ब्रम्ह समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज जैसी अनेक संस्थाओं की स्थापना की गई। उस दौरान महिला अधिकारों के संरक्षण हेतु अनेक अधिनियम प्रकाश में आये। उन अधिनियमों में १८२९ में सती प्रथा निशेध कानून, हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम १८५६, एज ऑफ कंसेट एक्ट १८९१, शारदा एक्ट १९३० आदि उल्लेखनीय हैं । २० वीं शताब्दी में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाऐं अपने घरों की चार दिवारी से बाहर निकलकर संगठित होने का प्रयास आरंभ करती हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान समानता, स्वतंत्रता तथा बंधुत्व जैसे उच्च मानवीय आदर्शों को स्थापित करने का एक सशक्त प्रयास एवं मील का पत्थर है, जिसमें समता मूलक सभी प्रावधान स्त्री के समस्त अधिकारों के पोषक हैं, प्रवक्ता हैं, गारंटर हैं । भारतीय संविधान में नारी अधिकारों के संबंध में प्रमुख उपबंध अनुच्छेद १४, १५, १६, २३, ३८, ३९, ४२, ४४, ३२६ इत्यादि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं, जो भारतीय स्त्री को समानता और स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। हाल ही में भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी के रूप में एक आदिवासी समुदाय से महिला का आसीन होना भारतीय नारी के सशक्तिकरण का सर्वोच्च शिखर है । लेकिन.....

क्या वास्तव में ऐसा है शायद नहीं ! यद्यपि महिलाओं का निरन्तर विकास अवश्य हुआ है, किन्तु यह पूरा सच नही है। तस्वीर का दुसरा पहलू कहीं अधिक स्याह और अधिक निराशाजनक है। जनांकिकी आंकड़ो में आज भी लिंगानुपात और महिला साक्षरता की दर कुछ और ही कहानी कहती है ।

आदिकाल से वर्तमान अंतरिक्ष काल तक हर एक कालखण्ड में कुछ प्रभावशाली महिलाऐं शिखर पर मिलती हैं जैसे प्राचीन काल में वैदिक मंत्रों की रचना करने वाली घोषा, अपाला विश्वारा, मध्यकाल में रजिया सुल्तान, नूरजहां, आधुनिक काल में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्या बाई होल्कर, श्रीमती इंदिरागांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजनी नायडू, कल्पना चॉवला, लता मंगेश्कर और खेल जगत की मैरीकाम, सायना नेहवाल जैसे कुछ नाम है, जिन्हे उंगलियों में गिना जा सकता है। इनकी संख्या बढ़नी चाहिए। यह संख्या तभी बढ़ेगी जब शिक्षित भारतीय नारी उस नारी से एकात्म स्थापित करेगी जो आज भी पढ़ी लिखी नही है, संवैधानिक अधिकारों, अधिनियमों, शासकीय योजनाओं, कार्यक्रमों से अनभिज्ञ है ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता की महज युक्तियों मात्र से खुश हो जाने और अपनी जिम्मेदारियों से पलड़ा झाड़ने वाले पुरूष प्रभावी भारतीय समाज में अपनी मानवीय अधिकारों के लिए भारतीय नारी आज भी निरंतर संघर्षशील है । अधिकार संपन्न आधुनिक भारत की शिक्षित नारी को बहुसंख्यक नारी समाज के सुख–दुख और उसके जीवन–मरण के प्रश्नों से साझा होना होगा। अपनी संवेदनाओं का विस्तार करना होगा। और ऐसा होगा शायद तभी संपूर्ण भारतीय नारी को सार्थक दशा और दिशा मिल पायेगी । ऐसा समग्र परिवर्तन ही वास्तव में सही मायनों में महिला सशक्तिकरण होगा.....

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति – डॉ. के.सी.श्रीवास्तव (Pg No- 55,88,89,102,107 181, 182, 183, 185, 186 भारत का इतिहास – डॉ. ए.के. मित्तल ११५

भारतीय नारी के उद्धारक — डॉ. बाबा साहब भीमराव अंबेडकर — डॉ. कुसुम मेघवाल (Pg No- & 105 & 112)

आधुनिक भारत का इतिहास — बी.एल. ग्रोवर और यशपाल (Pg No- 281-282)

भारत का इतिहास — डॉ.ए.के. मित्तल (१२०६ से १७६१ तक) Pg No- 204

इतिहास (भाग २) श्री एल ठाकुर (Pg No- 176, 191, 192)

मध्यकालीन भारतीय इतिहास — डॉ. विश्वेश्वर स्वरूप भार्गव एवं डॉ. नीलिमा भार्गव Pg. No. 395-398)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति — डॉ. राजीव दुबे (Pg No- 11, 21, 48, 61, 133, 134)

प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास — डॉ. विमल चंद्र पाण्डे (Pg No- 147) , 187)

⌘⌘⌘

33

सर्पगन्धा की खेती एवं आजीविका सृजन

मधुरानी
शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग,
एम.एल.बी. कॉलेज, भोपाल, म.प्र. भारत

डॉ. रीता जायसवाल
प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग,
एम.एल.बी. कॉलेज, भोपाल, म.प्र. भारत

सार

भारतीय परिपेक्ष्य में रोजगार सृजन, स्वरोजगार संवर्धन, विदेशी मुद्रा अर्जन तथा जन सामान्य के स्वास्थ्य संरक्षण की दृष्टि से जिन क्षेत्रों को सर्वाधिक संभावना सम्पन्न माना जा रहा है, उनमें से औषधीय खेती तथा इससे जुड़े विभिन्न क्रियाकलाप मुख्य हैं भारत वर्ष में औषधीय पौधे तथा उनके उपयोग का इतिहास लगभग ७००० वर्ष पुराना है। वर्तमान में भारत में प्रतिवर्ष लगभग ३,१९,५०० टन कच्ची जड़ी —बूटियों की मांग है जिनमें से १,७७,००० टन की मांग विभिन्न हर्बल उद्योगो में ८६,००० टन घरेलू उपयोग में तथा ५६,५०० टन की मांग निर्यात बाजार हेतु है।

गतवर्षों में भारत में औषधीय पौधों के निर्यात में प्रतिवर्ष लगभग २०% की वृद्धि हो रही है परन्तु अभी भी विश्व व्यापार में भारत की भागीदारी १% से भी कम है इसलिए मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ ने पिछले लगभग १० वर्षों में लघुवनोपजों, जिसमें जड़ी—बूटियॉ सम्मिलित है, के उत्पादन, संरक्षण एवं संवर्धन के लिये अथक प्रयास किये हैं । लघु वनोपज द्वारा हर्बल प्रदेश के वनों में प्रमुख रूप से सर्पगन्धा, सतावर, सफेद मूसली, आँवला आदि जैसे

GOVERNMENT DIGVIJAY AUTONOMOUS PG COLLEGE, RAJNANDGAON, INDIA

First International Conference

on

"ROLE OF APPLIED SCIENCES IN SOCIAL IMPLICATIONS (IC-RASSI)"

SPONSORED BY

Autonomous Examination Cell, Janbhagidari Samiti & Chhattisgarh Environment Conservation Board

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This certificate is proudly presented to

Miss Usha Sahu From Govt Dr BSBA PG College Dongargaon

For having participating in the International Conference on Role of Applied Sciences in Social Implications (IC-RASSI), organized by Faculty of Science, Govt. Digvijay Autonomous PG College, Rajanandgaon, Chhattisgarh, India [illegible]th to 8th February, 2023.

DR. PRAMOD KUMAR MAHISH **ORGANIZING SECRETORY**	**DR. HEMANT KUMAR SAW** **CO- CONVENER**	**DR. SURESH KUMAR PATEL** **CONVENER**	**DR. K. L. TANDEKAR** **PATRON** **PRINCIPAL**